मासिक, विशेषांक 2018

वर्ष 6, अंक 12, ₹50

फेम इंडिया

सोच बदलें, समाज बदलेगा

50 प्रभावशाली बिहारी

एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे

फेम इंडिया

सोच बदलें, समाज बदलेगा

सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्री

फेम इंडिया -एशिया पोस्ट सर्वे

- नागरिक सुरक्षा/ अपराध नियंत्रण
- स्वास्थ्य
- शिक्षा
- आर्थिक संपन्नता/ कारोबार
- गरीबी उन्मुलन और रोजगार
- खाद्य सुरक्षा
- समाज सुधार
- कृषि सुधार और ग्रामीण विकास
- शहरी विकास और निर्माण
- पर्यटन और कला संस्कृति का विकास

अपनी राय मेल करें

info@fameindia.co

या वाट्सऐप करें

9711535422

www.fameindia.co

संपादकीय

हाँ – हम है बिहार से

किसी भी देश और राज्य के विकास में उसका नेतृत्व करने वाले नायकों के विचारों और उसकी नीतियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है , सौभाग्य से बिहार उद्योग धंधों में भले कमजोर रहा हो मगर विचारों से सदैव धनी रहा है सही अर्थों में बिहार वैचारिक आंदोलनों की भूमि रहा है , कम्युनिष्ट और समाजवादी आन्दोलन इसी धरती से फले -फुले , जहाँ एक ओर बिहार देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद , स्वामी सहजानंद , जयप्रकाश नारायण , कर्पूरी ठाकुर जैसे राजनेताओ की जन्मभूमि रहा है वहीं गाँधी जी और चंपारण के संबंध को क्या कोई नकार सकता है. आर्यभट , चाणक्य , चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, गुरु गोविन्द सिंह, वीर कुंवर सिंह जैसे इतिहास पुरुषो की जन्मभूमि बिहार ने समय समय पर दुनिया को मार्गदर्शन देने का कार्य किया है , बिहारी अपनी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता से देश ही नहीं दुनिया में बड़ी भूमिका निबाह रहे हैं इनमे विश्व प्रसिद्द उद्योगपति ,न्यायविद , समाजसेवी , ब्यूरोक्रेट , पुलिस पदाधिकारी, शिक्षाविद् , वैज्ञानिक , कलाकार , कॉर्पोरेट जगत के प्रमुख सभी शामिल है ,अनिल अग्रवाल , डॉ बिन्देश्वर पाठक, उदय शंकर , रविन्द्र किशोर सिन्हा , संपदा सिंह जैसे उद्यमी और समाजसेवी देश दुनिया में अपनी जन्म भूमि का मान बढ़ा रहे है वही राष्ट्रिय मीडिया में भी बिहारी पत्रकार बड़ी भूमिका निभा रहे है चर्चित पत्रकार राज कमल झा ,राणा यशवंत , रवीश कुमार जन सरोकार के सवालों को प्रमुख मुद्दा बना कर पत्रकारिता का नया प्रतिमान स्थापित कर रहे है , कॉर्पोरेट हो या ब्युरोक्रेसी हर ओर बिहार के लोग बेहतर कर बिहारी शब्द के गौरव का अहसास करा रहे है .सच तो यह है की विचारों का अकूत खजाना सदैव बिहार के पास रहा है , कभी बिहार के नालंदा विश्वविद्यालय से पूरी दुनिया में ज्ञान की रोशनी फैलती थी, किसी भी देश व समाज की प्रगति में वहां के विद्वानों और उनके विचारों का महत्वपूर्ण योगदान होता है ,जहाँ विचार नहीं ,वहां विकास नहीं ,बिहार देश के उन राज्यों में हैं जहाँ के ऐसे हीरो का खजाना दुनिया भर में फैला हुआ है .एशिया पोस्ट -फेम इंडिया का यह सर्वे राज ठाकरे या उस जैसे अन्य बयानबाजो को करार जबाब भी है जो बिहारियों का उपहास करते है जबकि सच यह है कि ये बयानबाज नेता अपनी कार्यशैली और नीतियों के कारण खुद उपहास के पात्र है उनका अपने राज्यों या देश के विकास में कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं है , आने वाले दिनों में देश के विकास में बिहारी प्रतिभाओ की भूमिका और बढ़नी तय है , फेम इंडिया मैगज़ीन ने बिहार की प्रतिभाओ के अकूत खजाने से पचास नायब हीरे चुने है , ये सभी अपने अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है , इनकी राष्ट्रिय अंतराष्ट्रीय स्तर पर भूमिका , गौरवान्वित करने वाली सफलता व सामाजिक योगदान इत्यादि पाँच बिन्दुओ के आधार पर संबंधित क्षेत्रो के प्रबुद्धजनों और आम राय में उनका सर्वेक्षण व मूल्यांकन किया है और उसी आधार पर इनकी रेटिंग की गयी है
फेम इंडिया -एशिया पोस्ट ने प्रभावशाली बिहारी 2018 के इस सर्वे में बिहार के रहने वाले देश दुनिया के कार्यरत 500 लोगो के नाम शामिल किये जिनमे प्रमुख 50 से आपका परिचय करवाते गर्व हो रहा है , इनकी बुद्धिमता , सफलता , कार्यशैली की धमक आज दुनिया भर में है जो किसी भी बिहार वासी में यह गर्व से कहने का जज्बा पैदा करती है की – हाँ हम है बिहार से .

editor@fameindia.co

फेम इंडिया

www.fameindia.co

वर्ष 6, अंक 12, विशेषांक 2018

पैट्रन – ई आर महादेवन
प्रसिडेंट – विश्वनाथ पी देव
मैनेजिंग डायरेक्टर – राजश्री सोंथालिया
एडिटर इन चीफ – यू एस सोंथालिया
मैनेजिंग एडिटर – श्वेता श्री
कंटेट एडिटर – शंकर सोंथालिया

एसोसियेट एडिटर – धीरज कुमार
कंसलटिंग एडिटर – अभिरंजन कुमार
नेशनल ब्यूरो चीफ – नम्रता नारायण
रेजीडेंट एडिटर – डॉ.विष्णु राजगढिया
आर्ट डायरेक्टर – स्वर्ण लता

एडिटोरियल टीम :-
शत्रुघ्न प्रसाद
नीलम शुक्ला
मनजीत सिंह
संजय बाली
हेमंत सिंह
हिमांशु पुंडिर
आनंद वर्मा
अश्विनी अग्रवाल
महेश चंद्रा

वेव टीम – रश्मि सिंह
फोटो रिसर्चर – राजेश वर्मा
विधि सलाहकार – रश्मि भूषण
सेल्स मार्केटिंग मैनेजर
रंजीत झा – 9711536223
सर्कुलेशन मैनेजर
प्रवीण कुमार मिश्रा – 9210540900

मुद्रक, प्रकाशक, संपादक राजश्री द्वारा ज्योति प्रिंटर्स,
ई – 93, सेक्टर-6, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर से मुद्रित एवं
ए-533, जीडी कॉलोनी, मयूर विहार फेज-3, दिल्ली-110096
से प्रकाशित

संपादकीय एवं मार्केटिंग ऑफिस
फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा.लि.
762,ब्लाक-एफ 8, सेक्टर-50, नोएडा 201304 (उ.प्र.)
फोन नं.- +91-7004450124

ई मेल: info@fameindia.co

D.L.No.F-3/Press 2012

RNI No. DELHIN/2012/48773

अनिल अग्रवाल
फाउंडर, वेदांत रिसोर्सेज कारपोरेशन

सुशील कुमार
कोयला सेक्रेटरी

उत्पल कुमार सिंह
मुख्य सचिव, उत्तराखंड

50 प्रभावशाली बिहारी

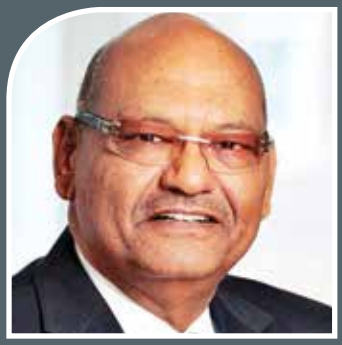

डॉ बिन्देश्वर पाठक
फाउंडर, सुलभ इंटरनेशनल

सम्प्रदा सिंह
फाउंडर व चेयरमैन,
एल्केम लैबोरेट्रीज

50 प्रभावशाली बिहारी

कभी विश्व के आगे ज्ञान, नीति और शक्ति का उदाहरण बनने वाले बिहार के लोग हमेशा ही हर क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं. फेम इंडिया ने बहुचर्चित सर्वे एजेंसी एशिया पोस्ट के साथ मिल कर ऐसे करीब तीन सौ लोगों का सर्वेक्षण करवाया जो आज दुनिया भर में अपनी मिट्टी की महक बिखेर रहे हैं.

ये लोग समाज के विभिन्न क्षेत्रों - व्यापार, समाज सेवा, विज्ञान-तकनीक, पत्रकारिता, राजनीति, शिक्षा, न्यायपालिका, प्रशासन आदि से हैं और अपना मानदंड खुद ही स्थापित कर रहे हैं. करीब दो महीने चले इस सर्वे में हमने उन लोगों की लोकप्रियता, उनके द्वारा किये गये कार्यों की चर्चा, उनकी सामाजिक स्थिति, उनका लोक-व्यवहार, उनकी विद्वता और प्रभाव आदि कई कसौटियों पर परखा. सोशल मीडिया और प्रत्यक्ष सर्वेक्षण और एसएमएस आदि कई तंत्रों से डाटा इकट्ठा करना आसान नहीं था. जो लोग प्रमुख स्थान हासिल कर प्रकाशित हुए हैं उन्हें फेम-इंडिया परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

हम 50 प्रमुख हस्तियों का परिचय प्रकाशित कर रहे हैं जो अपनी जन्मभूमि या मूल भूमि का नाम पूरी दुनिया में रौशन कर रहे हैं. शेष 250 लोग भी ऐसे हैं जो अपनी किसी एक प्रतिभा के दम पर टॉप-50 में शामिल होने का माद्दा रखते हैं, लेकिन सर्वे में सभी आधारों पर चोटी का स्थान नहीं हासिल कर पाये. ऐसी हस्तियों से उम्मीद की जाती है कि वे अगले सर्वे में शिखर पर पहुंचने में कामयाब होंगे.

बहुत संभव है कि पूरी प्रक्रिया में कुछ त्रुटियां रह गयी हों, लेकिन हमने हर संभव प्रयास कर वास्तविक स्थिति को सामने लाने की कोशिश की है और बिहार की लब्ध प्रतिष्ठित हस्तियों को सम्मानित करने की दिशा में एक पहल की है. उम्मीद है कि हमारे पाठक बिना किसी राग-द्वेष के इन सम्मानित जनों की उपलब्धियों को सराहेंगे और अपने लिये आगे बढ़ने की प्रेरणा के तौर पर उनके जीवन को मिसाल बनायेंगे.

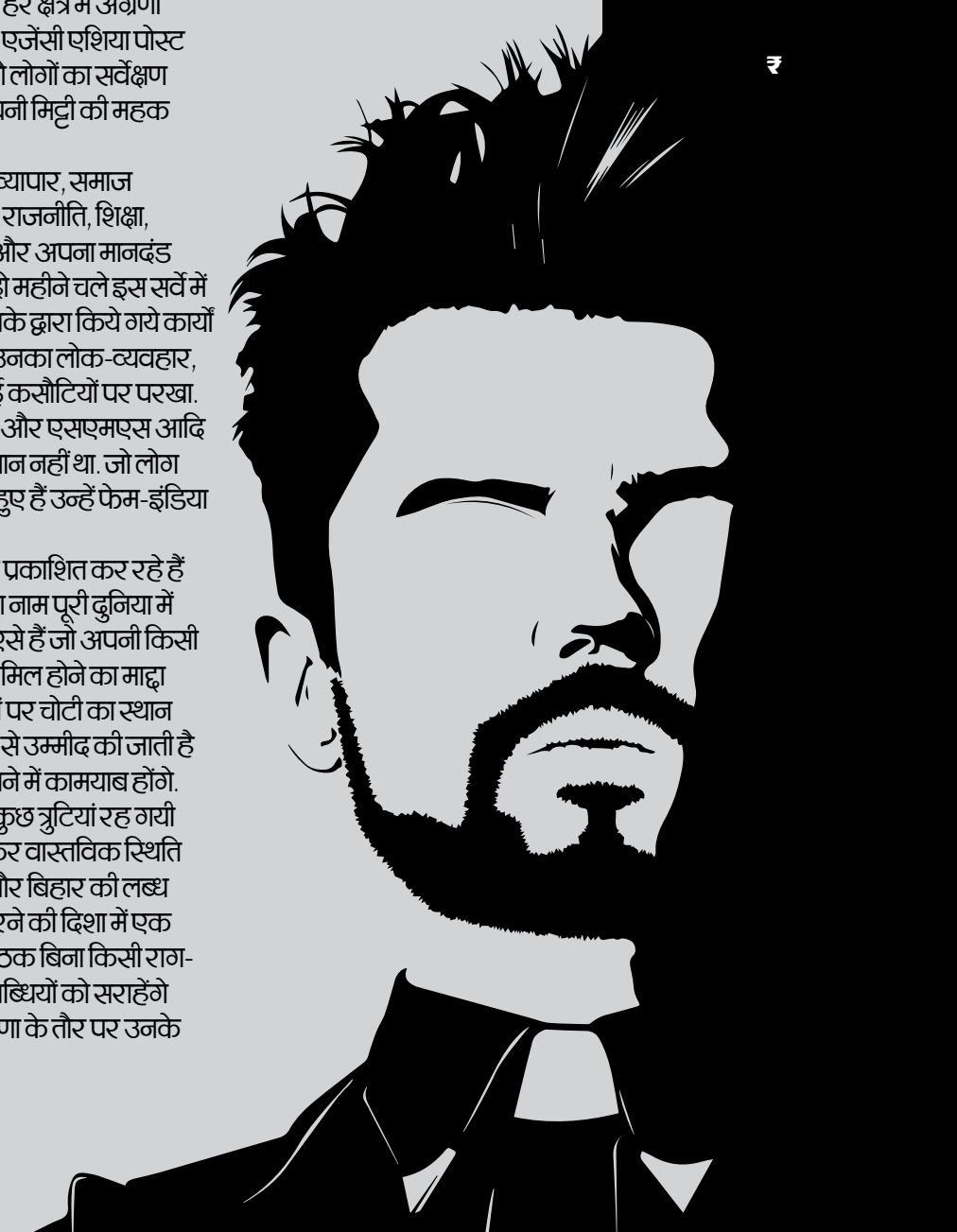

FAME INDIA fi 50 प्रभावशाली बिहारी

प्रेरणादायक

बड़े इरादों के कामयाब उद्योगपति- वेदांत रिसोर्सेज कारपोरेशन के फाउंडर अनिल अग्रवाल विश्व स्तरीय सफलता व लाखों करोड़ की मिल्कियत के साथ आज विश्व के प्रमुख उद्योगपतियों में शामिल हैं, पटना की छोटी गलियों से निकल न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज तक पहुंचने वाले अग्रवाल को अपने बिहारी होने पर बेहद गर्व है. इनके नेतृत्व में समाजसेवी संस्थान वेदांत फाउंडेशन बाल विकास, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में विश्व स्तर पर बहुत से कार्य कर रही है. ये एक ऐसे उद्योगपति हैं जिन्होंने अपनी पारिवारिक सम्पत्ति का 75 प्रतिशत धन समाज विकास में लगाने का प्रण लिया है.

बड़े इरादे से कामयाबी का मुकाम पाने वाले

अनिल अग्रवाल

सफल बिजनेस मैन के तौर पर इन्हें कई अवार्ड से सम्मानित किया गया है जिनमें इकोनॉमिक टाइम्स बिज़नेस लीडर अवार्ड -2012, माइनिंग जर्नल लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड 2009 दी एशियन अवाड्र्स इंटरप्रेन्योर ऑफ़ दी इयर अवार्ड -2016 प्रमुख हैं. दलाई लामा के विचारों से प्रभावित 62 वर्षीय अनिल अग्रवाल ने 17 वर्ष की आयु में ही परिवार की साधारण आय के कारण पिता के छोटे से कारोबार में सहयोग करना शुरू कर दिया था. लोहे के कबाड़ के बेहद साधारण कारोबार से व्यापार की शुरुआत कर आज मेंटल्स और माइनिंग के क्षेत्र में विश्व के सबसे बड़े व्यवसायियों में शुमार अनिल अग्रवाल नौजवान पीढ़ी के लिए प्रेरणा-स्त्रोत हैं.

कई विश्व स्तरीय कम्पनियों के बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर अनिल अग्रवाल का सपना भारत में विश्व की सबसे बड़ी शिक्षण व अनुसन्धान संस्थान स्थापित करने का है. लम्बे संघर्ष से बड़े उद्योगपतियों में खुद को शुमार कर इन्होंने बिहारी होने के गर्व को दुनिया में स्थापित किया है औद्योगिक क्षेत्र में सफलता का इतना बड़ा उदाहरण पेश कर बिहार के लोगों की जीवंतता से देश दुनिया को परिचित ही नहीं करवाया बल्कि आने वाली पीढ़ी को ये पैगाम भी दिया है कि शुरुआत कैसी भी हो आत्मबल की मजबूती से दुनिया जीती जा सकती है. **एशिया पोस्ट- फेम इंडिया सर्वे** में दुनिया के बड़े उद्योगपतियों में शामिल अनिल अग्रवाल बिहार से ताल्लुक रखने वाले 50 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में **कामयाब कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ पायदान पर हैं.

शख्सियत

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

विश्वविख्यात समाजसेवी 73 वर्षीय डॉ बिन्देश्वर पाठक ने समाज के लिए सबसे जरूरी स्वच्छता, मानवाधिकार, पर्यावरण और समाज सेवा के क्षेत्र में कार्य से देश दुनिया में बड़ी पहचान बनायी है. इनके कार्य को सिर्फ स्वच्छता, तक मानना बेमानी होगा क्योंकि बिहार के पारंपरिक ब्राह्मण परिवार जन्म होने के बावजूद अछूत माने जाने वाले भंगी समुदाय के लिए किये गए इनके कार्य अतुलनीय हैं, जो इन्हें सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक से ज्यादा एक समाजशास्त्री बनाते हैं.

दुनिया को स्वच्छता की परिभाषा समझाने वाली शख्सियत

डॉ बिन्देश्वर पाठक

महात्मा गांधी व डॉ. अंबेडकर की विचारधारा के पक्षधर डॉ. पाठक स्नातक की पढ़ाई पूरी कर बिहार गाँधी सेनेटरी सेलिब्रेशन कमेंटी से जुड़े. इस दौरान की गयी यात्राओं में इन्हें मैला ढ़ोने वाले लोगों की समस्या को जानने समझने का मौका मिला. इसके बाद 1970 में इन्होंने सुलभ इंटरनेशनल की स्थापना की. करीब 43 वर्षों से स्वच्छता, व सामाजिक छुआछूत को ले कर किये जा रहे सुलभ इंटरनेशनल के कार्य आज विश्व की जरूरत बन गये हैं. इनके समाज विकास के कार्यों की विशेषता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि न्यूयॉर्क के मेंयर ने 14 अप्रैल 2016 को बिन्देश्वर पाठक डे के तौर पर घोषित किया.

समाज सेवा के विशिष्ट कार्यों के लिए पद्मभूषण अवार्ड से सम्मानित डॉ. पाठक को राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 60 से ज्यादा अवार्डों से नवाजा जा चुका है. सन् 2003 में श्री पाठक का नाम विश्व के 500 उत्कृष्ट सामाजिक कार्य करने वाले व्यक्तियों की सूची में प्रकाशित किया गया। श्री पाठक को एनर्जी ग्लोब पुरस्कार भी मिला. इन्होंने पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने के लिये प्रियदर्शिनी पुरस्कार एवं सर्वोत्तम कार्यप्रणाली के लिये दुबई अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त किया है.

देश दुनिया में बड़ी पहचान बनाने वाले डॉ पाठक बिहारी अस्मिता और पहचान के **एशिया पोस्ट- फेम इंडिया सर्वे** 2018 के 50 प्रभावशाली व्यक्ति की सूची में **शख्सियत कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान बनाने में सफल रहे.

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

प्रेरणादायक

इंडियन लीडरशिप अवार्ड सहित देश दुनिया के कई सम्मानों से सम्मानित देश के सबसे बड़े टेलीविज़न नेटवर्क ग्रुप स्टार इंडिया के चेयरमैन व सीईओ उदय शंकर के उदय की गाथा बहुत ही प्रेरणादायक है. बचपन से पत्रकार बनाने की इच्छा रखने वाले शंकर का जन्म बिहार के प्रतिष्ठित इंजीनियर परिवार में हुआ. पिता की इच्छा थी कि ये सिविल सर्विसेज में जायें तो उनकी राय मान ये इकोनॉमिक्स मास्टर्स डिग्री हासिल करने जवाहर लाल नेहरु युनिवर्सिटी दिल्ली आ गये.

मीडिया में बड़े बदलाव के वाहक

उदय शंकर

मास्टर्स डिग्री के करने के साथ ही यूपीएससी द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज की परीक्षा में पहली बार ही ये इंटरव्यू तक पहुंच गये, परन्तु इंटरव्यू में छंटने के बाद परिवार के विरोध के बावजूद इन्होंने अपने सपने को पूरा करने के लिए टाइम्स स्कूल ऑफ़ जर्नलिज्म, दिल्ली से पत्रकारिता में स्नातक किया. पत्रकारिता में इनके कॅरीअर की शुरुआत टाइम्स ऑफ़ इंडिया, पटना से हुई. एक लम्बे संघर्ष पूर्ण सफ़र के साथ कई पत्र-पत्रिकाओं में काम करते हुए 1995 में ज़ी न्यूज़ से इनके टीवी पत्रकारिता की शुरुआत हुई. बाद में ये 'आजतक' कार्यक्रम के एडीटर और फिर चैनल के न्यूज़ डायरेक्टर बने. 2004 में उदय शंकर स्टार ग्रुप और आनंद बाजार पत्रिका के जॉइंट वेंचर स्टार न्यूज़ से जुड़े. इन्होंने अपने नेतृत्व में स्टार न्यूज़ को देश का सबसे लोकप्रिय न्यूज़ चैनल बना दिया. ये देश के चोटी के पत्रकार माने जाते थे. इनको न्यूज़ इंडस्ट्रीज में सफलता का पर्याय माना जाने लगा, परन्तु एक सफल पत्रकार के सफल व्यवसायी होने की पहचान की शुरुआत 2007 में इनके स्टार टीवी ग्रुप के सीईओ बनाने के बाद हुआ. इन्होंने इंटरटेनमेंट इंडस्ट्रीज में नये आइडिया से बड़ा परिवर्तन किया जिससे आज स्टार इंडिया 8500 करोड़ के रेवेन्यु, 40 चैनलों और 100 देशों के करीब 72 करोड़ दर्शकों के साथ सबसे बड़ी ब्रॉडकास्ट कम्पनी बनी हुई है. मीडिया में सफलता का झंडा फहरने वाले उदय शंकर को **एशिया पोस्ट- फेम इंडिया सर्वे** की आम राय में प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में **प्रेरणादायक कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर हैं.

लगनशील

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

मूल रूप से बिहार के रहने वाले जस्टिस नवीन सिन्हा सुप्रीम कोर्ट के जज हैं. वे राजनीति में अपराधियों की घुसपैठ जैसे महत्वपूर्ण मामलों की सुनवाई कर रहे हैं. सुप्रीम कोर्ट के कोलेजियम की संस्तुति पर राष्ट्रपति द्वारा सुप्रीम कोर्ट में नियुक्त किए जाने से पहले वे राजस्थान तथा झारखंड हाईकोर्ट के जीफ जस्टिस की जिम्मेदारी निभा चुके हैं. 9 अगस्त 1956 को जन्में जस्टिस सिन्हा ने पटना के सेंट ज़ेवियर के हाई स्कूल से पढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने बीए ऑनर्स और दिल्ली विश्विद्यालय कैंपस के लॉ सेंटर से एलएलबी की पढ़ाई की। उन्होंने वकील के रूप में 26 जुलाई 1979 से प्रैक्टिस करना शुरू किया।

कई हाईकोर्ट को डिजीटल बनाने वाले जस्टिस

नवीन सिन्हा

पटना हाई कोर्ट में 23 साल तक वकालत करने के बाद उन्हें केंद्र सरकार की कई संस्थाओं का काउंसिल नियुक्त किया गया। 11 फरवरी 2004 को उन्हें पटना हाईकोर्ट के परमानेंट जज के रूप में नियुक्त किया गया। जहां से उन्हें छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ट्रांसफर किया गया। जुलाई में छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के जज के रूप में शपथ लेने के बाद जस्टिस सिन्हा ने कहा था कि हर हाईकोर्ट की अपनी एक विशेषता होती है। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट देश में सबसे सुंदर हाई कोर्ट है। उन्होंने कहा कि वे इस दिशा में कार्य करेंगे कि हाईकोर्ट से फैसले भी ऐसे आएं जो कानून के नजरिए से मील के पत्थर साबित हो सकें।

पटना, छत्तीसगढ़ और राजस्थान उच्च हाईकोर्ट में कम्प्यूटरीकरण का श्रेय जस्टिस सिन्हा को दिया जाता है। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट को उन्होंने कोर्ट फीस का भुगतान इलैक्ट्रॉनिक रूप से स्वीकार करने वाला देश का दूसरा हाईकोर्ट बना दिया। इसके बाद उन्होंने राजस्थान हाईकोर्ट में भी इसकी शुरूआत की। अपनी राष्ट्रिय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है ,उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **लगनशील कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

असरदार

प्रेस काउंसिल ऑफ़ इंडिया का मुख्य कार्य प्रेस अर्थात पत्रकारिता की पहरेदारी है यह काउंसिल वर्तमान में प्रेस काउंसिल ऐक्ट 1978 के तहत कार्य करती है, जिसमें पत्रकारिता की स्वतंत्रता और पत्रकारों की सुरक्षा के पक्ष में सहयोग से लेकर मीडिया पर लगे किसी भी आरोप की जांच तक शामिल है. इसके चेयरमैन सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज होते हैं. लोकतंत्र की मजबूती के साथ एक ओर जहां जिम्मेदार पत्रकारिता की जरूरत बढ़ती जा रही है वहीं पत्रकारों की सुरक्षा, स्वतंत्रता व समाज शासन-प्रशासन के सहयोगात्मक रवैये की जरूरत भी बढ़ती जा रही है.

प्रेस काउंसिल को असरदार बनाने वाले शख्स

चंद्रमौली कुमार प्रसाद

वर्तमान में प्रेस काउंसिल ऑफ़ इंडिया के चेयरमैन व सुप्रीम कोर्ट से सेवा निवृत्त न्यायाधीश चंद्र मौली कुमार प्रसाद का जन्म बिहार के पटना में हुआ था.

इन्होंने लॉ की पढ़ाई पटना यूनिवर्सिटी से पूरी कर 1973 में पटना हाई कोर्ट में वकालत की शुरुआत की. 1989 में वरिष्ठ अधिवक्ता बने. 1994 में इनकी नियुक्ति पटना हाई कोर्ट में स्थायी जज के तौर पर हुई. ये 2009 में इलाहाबाद हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बने. 2010 में ये सुप्रीम कोर्ट में न्यायधीश बने और 2014 में सेवानिवृत हुए. 2015 में इन्हें प्रेस काउंसिल ऑफ़ इंडिया का चेयरमैन बनाया गया. न्यायाधीश रहते हुए इन्होंने आम जन के हित में कई बड़े फैसले लिये. इन्हें बेहद मजबूत इच्छाशक्ति वाला न्यायविद माना जाता है, प्रेस काउंसिल के चेयरमैन के तौर पर पत्रकारों पर आये दिन हो रहे हमले और उनकी सुरक्षा के मुद्दे पर इन्होंने विशेष कानून व इस तरह की घटनाओं के विरुद्ध फास्ट ट्रैक कोर्ट के गठन के लिये सरकार को कहा है. कई जरूरी मुद्दों पर इन्हें पत्रकारिता की स्वतंत्रता का पक्ष में फैसला लेने वाला माना जाता है.

एशिया पोस्ट – फेम इंडिया मैगज़ीन सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में प्रेस काउंसिल के प्रमुख चंद्र मौली कुमार प्रसाद **असरदार कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर हैं।

उद्यमी

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

एल्केम लैबोरेट्रीज के फाउंडर व चेयरमैन सम्प्रदा सिंह देश के शीर्ष दवा उद्योगपतियों में शामिल है, राजनीति शास्त्र से मास्टर डिग्री प्राप्त 88 वर्षीय सम्प्रदा सिंह को फोर्ब्स मैगज़ीन ने 2013 में शीर्ष 100 आमिर भारतीयों में 48 वे स्थान पर माना, बिहार के जहानाबाद जिले के ओकरी गांव के साधारण परिवार में जन्मे श्री सिंह की सफलता लम्बे संघर्ष, सकारात्मक सोच और कठिन मेंहनत की मिशाल है.

बुलंद इरादे के सफल उद्यमी

सम्प्रदा सिंह

अपनी सफलता का कारण सहकर्मियों और व्यवसायिक सहयोगियों से बेहतर सम्बन्ध मानने वाले सम्प्रदा सिंह की पसंदीदा पंक्ति है – अभी मंजिले और है मीलो चलना बांकी है. 1953 में पटना में इन्होंने दवाइयों की छोटी सी दुकान खोली. सन 1960 में इन्होंने मगध फार्मा के नाम से डिस्ट्रीब्यूशन बिज़नेस में कदम रखा. श्री सिंह 1972 में पटना से मुंबई चले गये। वहां उन्होंने 1973 में अलकेम कंपनी की नींव डाली, हजारों करोड़ की टर्नओवर वाली अलकेम का कारोबार भारत के अलावा अफ्रीका, अमेंरिका और यूरोप में भी फैला है.

छोटे से मेडिकल स्टोर से शुरुआत कर दुनिया के कई देशों में व्यापार करने वाली विश्व-स्तर की फार्मा कम्पनी बनाना युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत तो हैं ही, साथ ही देश के विभिन्न हिस्सों में स्थापित फैक्ट्रीज में में आपने राज्य के लोगों के लिए रोजगार का सृजन भी कर रहे हैं. इन्हें फार्मा उद्योग के कई बड़े सम्मानित अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है जिनमें "दी मेंडिसिन अपडेट लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड – हेल्थ केयर अवार्ड 2002, "लाइफ टाइम कॉन्ट्रिब्यूशन अवार्ड -एक्सप्रेस फार्मा एक्सीलेंस अवार्ड" प्रमुख है, उद्योग जगत में बड़ी बुलंदी को पाने वाले सम्प्रदा सिंह को **एशिया पोस्ट – फेम इंडिया मैगज़ीन सर्वे** की आम राय में 50 प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में **उद्यम कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर है.

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

सरोकार

रविन्द्र किशोर सिन्हा – समाजसेवी व उद्यमी , फाउंडर -एस आई एस एशिया पैसिफ़िक में सबसे बड़ी सिक्योरिटी सर्विस देने वाली कंपनी के तौर पर उभरी एसआईएस के फाउंडर आर के सिन्हा ने कड़े संघर्षों के बाद अपना मुकाम स्थापित किया है जो प्रेरणादायक है. राज्यसभा के सबसे धनी-मनी सांसदो में शुमार आर के सिन्हा ने 1974 में किराये के छोटे से कमरे से अपनी कम्पनी की शुरुआत की थी. पॉलिटिकल साइंस व कानून से स्नातक रवीन्द्र किशोर सिन्हा 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध के समय एक पत्रकार के तौर पर क्राइम व राजनैतिक रिपोर्टिंग किया करते थे.

आम लोगो के सरोकार से जुड़े उद्यमी

आर के सिन्हा

इंडो पाक वॉर के रिटायर्ड फौजियों के पुनर्वास की सोच से इन्हें सिक्योरिटी सर्विस कम्पनी शुरू करने की प्रेरणा मिली. एक अच्छी सोच की शुरुआत आज एक लाख से ज्यादा लोगों के प्रत्यक्ष और इससे कई गुना लोगों के परोक्ष रोजगार का माध्यम है. रविन्द्र किशोर सिन्हा ने नौजवान युवा पीढ़ी को एक मार्गदर्शन देने का कार्य किया है. "जब भी आप लोगों की भलाई का सोच रखते हैं तभी वो आपकी तरक्की का माध्यम बन जाता है", जैसी सोच रखने वाले श्री सिन्हा की कंपनी और इसके लाखों सुरक्षाकर्मी देश के करीब 5000 से ज्यादा कॉर्पोरेट संस्थानों की सुरक्षा में दिन रात तैनात हैं. यह आर के सिन्हा की काबिलीयत का ही नतीजा है कि दो लोगों से शुरू की हुई कंपनी आज अरबों का कारोबार कर रही है.

ये 1999 से 2004 तक भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सलाहकार भी बनाये गये. विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़े रवीन्द्र किशोर सिन्हा निर्धन बच्चियों की शादी में मदद करते हैं. ये वात्सल्य ग्राम के अध्यक्ष भी हैं जो वृद्ध, अनाथ व निसहाय लोगों के लिए रहने व जीवनयापन की व्यवस्था सुनिश्चित करता है, सिक्योरिटी एसोसिएशन ऑफ़ सिंगापुर ने इन्हें 2006 में सिक्योरिटी प्रमोटर अवार्ड दिया था.

एशिया पोस्ट – फेम इंडिया मैगज़ीन के 50 प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में प्रमुख व्यवसायी, समाज सेवी रवीन्द्र किशोर सिन्हा **सरोकार कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर है.

मशहूर

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

हिन्दी फिल्मों के मशहूर बिहारी बाबू शत्रुध्न सिन्हा किसी परिचय के मोहताज नहीं है। उनका पूरा नाम शत्रुध्न प्रसाद सिन्हा है और उनका जन्म बिहार की राजधानी पटना में 9 दिसंबर 1945 को हुआ। वे अपने परिवार में चार भाइयों में सबसे छोटे हैं। मिस यंग इंडिया रही अभिनेत्री पूनम चांदीरमाणी सिन्हा उनकी पत्नी हैं और उनकी बेटी सोनाक्षी सिन्हा भी अपनी अदाकारी का लोहा मनवा रहीं हैं। शत्रुध्न सिन्हा ने पटना के प्रतिष्ठित साइंस कॉलेज से पढ़ाई की। कॉलेज की पढ़ाई के बाद थियेटर और नाटकों के शौकीन इस युवा कलाकार का दाखिला फिल्म एंड टेलीवीजन इंस्टीट्यूट पुणे में हो गया, जहां इन्होंने काफी बढ़िया प्रदर्शन किया। वहां से फिल्मों में काम करने के लिए वे मुम्बई आ गये।

हिन्दी फिल्मों के मशहूर बिहारी बाबू

शत्रुध्न सिन्हा

उन्होंने 1969 में पहली बार फिल्म में काम किया। उनकी बेहतरीन अदाकारी के लिए चार बार प्रतिष्ठित फिल्मफेयर अवॉर्ड के लिए नामित किया गया। पहली बार 1971 में पारस फिल्म के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ सपोर्टिंग ऐक्टर के लिए सम्मानित किया गया। इसके बार 1974 में दोस्त फिल्म के लिए, 1979 में काला-पत्थर के लिए फिल्म फेयर अवॉर्ड मिला। 1980 में दोस्ताना में उनकी भूमिका के लिए उन्हें बेस्ट एक्टर के लिए सम्मानित किया गया।

फिल्मफेयर के अलावा भी शत्रुघ्न सिन्हा को कई बार सम्मानित किया गया है। रेखा, हेमा मालिनी, स्मिता पाटिल और रीना रॉय के साथ उनकी जोड़ी ने पर्दे पर खूब कमाल दिखाया। सदी के महानायक अमिताभ बच्चन, विनोद खन्ना, धर्मेंद्र, जीतेंद्र, संजीव कुमार और कई दूसरे कलाकारों के साथ भी उन्होंने कई यादगार किरदार निभाये।

बतौर राजनेता शत्रुघ्न सिन्हा पहले 2009 और फिर 2014 में लगातार दो बार लोकसभा का चुनाव जीत चुके हैं। इससे पहले भाजपा नेता दो बार राज्यसभा सदस्य भी रह चुके हैं। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में तो उन्हें स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और जहाजरानी मंत्रालय में मंत्री भी बनाया गया था।

प्रकाश मेहरा की ज्वालामुखी, मनमोहन देसाई की नसीब, रमेश सिप्पी की शान, राज खोसला की दोस्ताना और यश चोपड़ा की फिल्म काला पत्थर उनकी यादगार फिल्मों गिनी जाती हैं। इसके अलावा कालीचरण, मेरा दोस्त मेरा दुश्मन, दो उस्ताद, आदमी सड़क का, मेरे अपने, भाई हो तो ऐसा, रामपुर का लक्ष्मण और खुदगर्ज में भी उनकी भूमिकाओं को याद किया जाता है। उन्होंने कई टेलीविजन शो में बतौर जज व होस्ट भी काम किया है। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे में 100 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **मशहूर कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

बेजोड़

प्रसिद्ध डेली न्यूज़ पेपर व विएना के इंटरनेशनल प्रेस इंस्टिट्यूट से एक्सीलेंस इन जर्नलिज्म के अवार्ड से सम्मानित इंडियन एक्सप्रेस के चीफ एडिटर राजकमल झा अन्तराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त नॉवेलिस्ट भी हैं. इनका जन्म बिहार के भागलपुर में हुआ. आईआईटी, खड़गपुर से मैकनिकल इंजीनियरिंग करते समय कैंपस मैगज़ीन "अलंकार" के एडीटर बने. 1988 में आईआईटी से ग्रेजुएट होने के पश्चात इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया से प्रिंट जर्नलिज्म में मास्टर्स डिग्री प्राप्त की.

राष्ट्रीय पत्रकारिता के बेजोड़ पत्रकार

राजकमल झा

इन्होंने 1992 में द स्टेट्समैन, कोलकता में असिस्टेंट एडीटर और 1994 में इंडिया टुडे में सीनियर एसोसिएट एडीटर के तौर पर काम करने के बाद 1996 में इंडियन एक्सप्रेस एग्जीक्यूटिव एडीटर के पद पर ज्वाइन किया और आज ये देश के सबसे उच्च स्तरीय इन्वेस्टिगेटिंग रिपोर्टिंग वाले समाचार पत्र के प्रधान संपादक है. राज कमल झा के नेतृत्व में ही अप्रैल 2016 में इंडियन एक्सप्रेस ने पनामा पेपर जैसे अंतर्राष्ट्रीय घपले को उजागर किया और इसमें शामिल भारत के बड़े लोग और भारतीय कम्पनी के काले धन से जुड़ी सूची भारत सरकार को उपलब्ध हुई. पुरस्कार वापसी की शुरुआत हो या फिर रोहित वेमुला पर खुलासा, झा के सम्पादकीय साम्राज्य में खबरें रूकती नहीं हैं. उन्होंने महाराष्ट्र में सूखे से लेकर पंजाब में कीटनाशक के घोटाले पर सबसे पहले फोकस किया. कोयला घोटाले और 2 जी स्कैम पर भी झा के नेतृत्व में रिपोर्टर्स ने बड़ी खोजी ख़बरें की हैं. रिपोर्टर्स को वो प्रेरणा देते हैं और इनवेस्टिगेटिव पत्रकारों को जिगर दिखाने की पूरी जगह.

हार्ड कोर पत्रकारिता के अलावा झा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के नॉवेलिस्ट भी हैं. राज कमल झा के लिखे तीन नॉवेल एक दर्जन से ज्यादा विदेशी भाषाओं में प्रकाशित हुए हैं. इनकी लिखी "द ब्लू बेडस्प्रेड" को "कामनवेल्थ राइटर प्राइज" और "न्यूयॉर्क टाइम्स नोटबुक ऑफ़ दी इयर" से सम्मानित किया गया. इनकी एक और किताब को "क्रॉसवर्ड बुक अवार्ड 2003" से नवाजा गया है.

एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन सर्वे 50 सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में **बेजोड़ कैटगरी** में प्रख्यात पत्रकार राज कमल झा सर्वश्रेष्ठ स्थान पर हैं.

लोकप्रिय

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

मैथिली और भोजपुरी और मगही संगीत को सम्मान व प्रसिद्धि दिलानेवाली लोक गायिका शारदा सिन्हा को बिहार कोकिला की उपाधि प्राप्त है, इन्होंने अपनी मधुर आवाज से लोक संगीत की गरिमा और सांस्कृतिक महत्व को दुनिया भर में एक नयी ऊंचाई दिलायी है. 9 अक्टूबर 1952 को बिहार के समस्तीपुर में जन्मी शारदा सिन्हा ने सबसे पहले पंचायती घराना के स्व. पंडित रघु झा से भारतीय क्लासिक संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त किया.ठुमरी और दादरा की शिक्षा इन्हें स्व. सीताराम हरी दांडेकर और पन्ना देवी से मिली.

पदम विभूषण से सम्मानित हैं लोकप्रिय लोक गायिका

शारदा सिन्हा

इनके लोक गायकी के प्रशंसक पूरी दुनिया में फैले हुए है, जिनमें रूस, चाइना, यु के, यु एस ए, मॉरिशस, सूरीनाम, जर्मनी, बेल्जियम, हॉलैंड आदि देश के लोग शामिल है.हिंदी सिनेमा में इनके गए कई लोक गीत जैसे "कहे तोसे सजना" – फिल्म -मैंने प्यार किया (सलमान खान की पहली फिल्म), "तार बिजली" – फिल्म -गैंग्स ऑफ़ वासेपुर, "कौन सी नगरिया" बहुत लोकप्रिय है. बिहार के सबसे पवित्र त्यौहार – छठ पर्व इनके लोक गीतों के बिना अधुरा है. इन्हें बिहार का सांस्कृतिक ऐम्बेसेडर मानना एक सही उदाहरण माना जाता है क्योंकि ये बिहार के लोक संगीत की मिठास, सांस्कृतिक उत्कृष्टता को लोगों के बीच ले जाने में बड़ी भूमिका निभा रही हैं. देश विदेश में शारदा जी को लोकगायिकी के कई उत्कृष्ट सम्मान समय-समय पर प्राप्त हुए हैं जिनमें लोक कलाश्री, बिहार गौरव, लोक रत्न, भिखारी ठाकुर सम्मान, .राष्ट्रीय अहिल्या देवी सम्मान, संगीत नाटक अकेडमी अवार्ड प्रमुख है. इन अवार्ड व सम्मानों के साथ ही इन्हें लोकगायकी के लिए देश के सबसे बड़े सम्मान "पद्म श्री" व पदम विभूषण से सम्मानित किया गया है. वर्तमान में ये कला संस्कृति के उत्थान से जुड़ी कई सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों के साथ मिल कर देश भर में लोकसंगीत के क्षेत्र में कई अभिनव कार्य कर रही हैं.

एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन के 50 प्रभावशाली व्यक्तियों के सर्वे में प्रसिद्ध लोक गायिका शारदा सिन्हा **लोकप्रिय कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर हैं.

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

कार्यकुशल

बिहार के सपूत अमिताभ कांत अपनी कार्यकुशलता और प्रशानिक क्षमताओं के चलते भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में खास स्थान बना चुके हैं। 1980 बैच के ये आईएएस अधिकारी प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में देश के लिए कल्याणकारी योजनाएं बनाने वाले नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। इसके पहले मार्च 2016 तक वे औद्योगिक नीति व प्रोत्साहन विभाग के सचिव थे। अमिताभ कांत का जन्म 1 मार्च 1956 को हुआ। उनकी स्कूली शिक्षा दिल्ली के मॉडर्न स्कूल से हुई। उन्होंने दिल्ली विश्विद्यालय उन्होंने के प्रतिष्ठित सेंट स्टीफेंस कॉलेज से अर्थशास्त्र में बीए (ऑनर्स) की और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम.ए. की पढ़ाई की।

कार्यकुशलता से कामयाबी की बुलंदी पर

अमिताभ कांत

उन्होंने शेवनिंग स्कॉलरशिप पर मैनचेस्टर बिजनेस स्कूल में भी पढ़ाई की। वे हॉर्वर्ड विश्वविद्यालय से मिड कैरियर कोर्स कर चुके हैं। उन्होंने जॉन एफ कैनेडी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट और भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) अहमदाबाद से भी पढ़ाई की है। उन्होंने औद्योगिक विकास के लिए नीति बनाने और उसे लागू कराने के साथ साथ औद्योगिक विकास और विशिष्ट औद्योगिक क्षेत्रों के विकार का खाका भी तैयार किया है। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) के लिए नीति बनाने और उसे सफलतापूर्वक लागू करने का श्रेय भी कांत की उपलब्धियों में से एक है। देश के विकास में उनकी क्षमताओं के अधिक से अधिक इस्तेमाल के लिए प्रधानमंत्री के निर्देश पर उन्हें सड़क परिवहन मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण में भी सदस्य बनाया गया है।

पर्यटन क्षेत्र के विकास में उन्होंने अभूतपूर्व योगदान दिया। वे केंद्र सरकार के पर्यटन मंत्रालय में संयुक्त सचिव रहे और केरल सरकार में भी पर्यटन सचिव की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और इनक्रेडिबिल इंडिया जैसे कार्यक्रमों का श्रेय अमिताभ को ही जाता है। अतिथि देवो भवः की शुरूआत भी उन्होंने ही की थी। अमिताभ कांत केरल सरकार के पर्यटन, औद्योगिक विकास निगम के सचिव रहे। वे यूएनडीपी के ग्रामीण पर्यटन परियोजना के राष्ट्रीय परियोजना निदेशक भी रहे। उन्होंने हस्तशिल्प, हथकरघा और संस्कृति विरासत के धनी गांवों में पर्यटन प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसके लिए उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्करों से सम्मानित किया गया है। उन्होंने मैटिफैड के प्रबंध निदेशक की जिम्मेदारी भी संभाली। केरल में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने कालीकट हवाई अड्डे को विकसित करने का काम किया। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे में 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **कार्यकुशलता कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

उम्मीद

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

राजीव नयन चौबे केंद्र सरकार में नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव हैं। उन्हें जून 2015 में ये जिम्मेदारी दी गयी थी। नरेंद्र मोदी सरकार के दौरान ये जिम्मेदारी संभालने वाले वे तीसरे अधिकारी हैं। नागरिक उड्डनय में विदेशी निवेश के रास्त खुलने के बाद उनकी जिम्मेदारी काफी बढ़ गयी है। इसके अलावा घाटे का सौदा साबित हो रही सरकारी क्षेत्र की विमानन कंपनी एयर इंडिया के उद्धार को लेकर भी उनसे काफी उम्मीद की जा रही है।

देश के नागरिक उड्डयन की उम्मीद

राजीव नयन चौबे

उन्होंने नागरिक उड्डयन नीति बनाने का भी महत्वपूर्ण काम किया। जिसे बाद में मंत्रिमंडल की मंजूरी कराकर लागू भी कर दिया गया। इससे पहले वे ऊर्जा मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव की जिम्मेदारी संभाल रहे थे।

राजीव नयन चौबे भले ही तमिलनाडु कैडर के 1981 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी हों लेकिन वे मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखते हैं। उन्होंने भौतिकी में एमएससी साथ-साथ आर्थिक सामाजिक नियोजन की पढ़ाई की है। 28 फरवरी 1959 को जन्मे चौबे को 1 सितंबर 1981 को भारतीय प्रशानिक सेवा में शामिल किया गया।

चौबे विभिन्न मंत्रालयों में अनेक प्रमुख पदों पर रहते हुए कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। मौजूदा सरकार में उन्हें पहले वित्त मंत्रालय में निदेशक और फिर संयुक्त सचिव का पद भी दिया जा चुका है। वे 2006 से 2009 तक दूरसंचार नियामक प्राधिकरण टीआरएआई के सलाहकार भी रह चुके हैं। 2010 और 2012 के बीच उन्हें कपड़ा मंत्रालय में हथकरघा विकास आयुक्त बनाया गया। अगले दो वर्षों उन्होंने पेट्रोलियम मंत्रालय में हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय के महानिदेशक की जिम्मेदारी संभाली और फरवरी 2014 में ऊर्जा मंत्रालय में जाने से पहले उन्हें पेट्रोलियम मंत्रालय में ही अतिरिक्त सचिव की जिम्मेदारी दी गयी। अपनी राष्ट्रिय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है , उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे में 50 प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में इन्हे **उम्मीद कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

अनुभवी

सरकारी स्वामित्व वाली देश की सबसे बड़ी जीवन बीमा कंपनी जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के अध्यक्ष वी के शर्मा को पांच वर्ष के लिए इस पद पर नियुक्त किया गया है। उन्हें ऐसे समय पर ये जिम्मेदारी दी गयी है जब निजी क्षेत्र की कंपनियां इस क्षेत्र में एलआईसी का वर्चस्व खत्म करन के लिए तमाम तरह के उपाय करने में जुटी हैं। ऐसे में न चुनौती केवल कंपनी के मुनाफे को बढ़ाने की है बल्कि बाजार पर कंपनी का एकाधिकार बनाए रखना भी है। कुशल और अनुभवी प्रशासक शर्मा से उम्मीद की जाती है कि उनके नेतृत्व में एलआईसी के प्रदर्शन में गुणात्मक वृद्धि होगी।

दूरगामी योजना बनाने में माहिर

वी के शर्मा

दिसंबर 2016 में केंद्रीय मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति द्वारा उनकी नियुक्ति को मंजूरी मिलने से पहले से वे कार्यकारी अध्यक्ष का कामकाज संभाल रहे थे। इससे पहले वे कंपनी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के पद पर तैनात थे। वे एलआईसी की सहयोगी एलआईसी हाउसिंग फाइनैंस कंपनी में प्रबंध निदेशक की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं। उन्होंने अप्रेल 2009 से नवंबर 2010 तक एलआईसी के दक्षिण जोन के क्षेत्रीय प्रबंधक के तौर पर सेवाएं दीं। इससे पहले वे 2006 से 2008 तक मुम्बई में कार्यकारी निदेशक पेंशन की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं। उन्होंने देश की सबसे ज्यादा मुनाफा कमाने वाली सरकारी क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनी में 1981 में काम करना शुरू किया था। शर्मा ने कंपनी में वित्तीय और प्रशासनिक और मार्केटिंग दोनों प्रकार की अहम जिम्मेदारियां निभायी हैं। 2014 में शर्मा को क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक आईसीआईसीआई के निदेशक मंडल में शामिल किया गया। कुशल प्रशासक और नेतृत्व छमता के धनी शर्मा ने कई बार विपरीत परिस्तिथियों में भी बेहतरीन प्रदर्शन किया। वे केनइंडिया लिमिटिड और एसीसी लिमिटेड जैसी एलआईसी की सहायक कंपनियों के बोर्ड के सदस्य भी हैं।

19 दिसंबर1958 को जन्मे शर्मा मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से वनस्पति विज्ञान में एमएससी की पढ़ाई की है। 35 वर्ष से अधिक का अनुभव रखने वाले शर्मा के बारे में कहा जाता है कि वे दूरगामी योजना बनाने और उसे पूरा करने में महारत हासिल है।अपनी राष्ट्रिय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है , उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे में देश के 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में **अनुभवी कैटगरी** में इन्हे प्रमुख स्थान पर पाया है।

जिम्मेदार

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

कोयला सचिव सुशील कुमार 1982 बैच के उत्तरप्रदेश कैडर के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी हैं। लगभग 35 वर्षों के कार्यकाल में वे कई महत्त्वूर्ण प्रशानिक पदों की जिम्मेदारियां संभाल चुके हैं। वे पर्यावरण वन एंव जलवायु परिवर्तन, शहरी विकास, उद्योग वस्त्र, पर्यटन, जल संसाधन, जहाजरानी आदि मंत्रालयों में सेवाएं दे चुके हैं। इससे पहले वे गृह मंत्रालय के विशेष सचिव रह चुके हैं। उन्हें सीमा प्रबंधन विभाग के सचिव की जिम्मेदारी दी गयी थी।

कई पुरस्कार से सम्मानित जिम्मेदार ब्यूरोक्रेट

सुशील कुमार

कोयला सचिव के तौर पर कोयला क्षेत्र में व्यावसायिक खनन के रास्ते खोलने का श्रेय उन्हें ही जाता है। उनके कार्यकाल के दौरान कोयला खदानों को व्यावसायिक खनन के लिए आबंटित करन का काम किया गया। कोयला खनन में तेजी लाने के साथ साथ उन्होंने पर्यावरण नियमों की अनदेखी करने वालों के कान उमेठने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी।

प्रशासनिक कुशलता और सराहनीय कार्यों को देखते हुए सुशील को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। कुशल प्रशासक और अपने दायित्व के प्रति कर्तव्य निष्ठ सुशील की गितनी देश के वरिष्ठतम अधिकारियों में की जाती है। प्रशासनिक अधिकारी के तौर पर 35 वर्षों के कार्यकाल के दौरान उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए अहम जिम्मेदारियां निभायी हैं। रियल स्टेट बिल तैयार करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही जिसे बाद में 2016 में ससंद की मान्यता के बाद कानून बना दिया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष के तौर पर उन्होंन प्रदूषण नियंत्रण के लिए कई आईडिया लागू किए।

पर्यावरण के लिए संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क लागू करने के लिए हुए समझौते में उन्होंने भारत के प्रतिनिधि के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। वे भारत की ओर से मुख्य वार्ताकार थे। दिसंबर 2015 में उन्होंने पेरिस समझौते में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया।

मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखने वाले सुशील कुमार का जन्म 21 अप्रैल 1958 को हुआ। उन्हें 1 सितंबर 1982 को प्रशानिक सेवा में शामिल किया गया। सुशील ने भौतिक विज्ञान में एमएससी और एमफिल की पढ़ाई की है। उन्होंने ब्रिटेन के बर्मिंघम विश्विद्यालय से एमबीए की डिग्री भी हासिल की है। अपनी राष्ट्रिय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है , उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे में देश के 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **जिम्मेदार कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

FAME INDIA fi 50 प्रभावशाली बिहारी

मजबूत

आइये आपको मिलाते हैं बिहार की एक ऐसी शख्सियत से जो देश भर में दवाओं और मेडिकल उपकरणों की कीमतों पर लगाम लगा कर करोड़ों लोगों का भला करने में सफल हुए हैं। असम-मेघालय कैडर के 1982 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी जय प्रिय प्रकाश फिलहाल रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय में औषधि विभाग के सचिव हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें रसायन एंव पेट्रोकेमिकल विभाग का अतिरिक्त प्रभार भी दिया गया है।

मजबूत इच्छाशक्ति वाले शख्स के तौर पर जाने जाते हैं

जय प्रिय प्रकाश

उन्होंने हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा दवाओं और हार्ट स्टेंट सहित कई अन्य स्वास्थ्य उपकरणों की कीमतों में नियंत्रण के फैसलों में अहम भूमिका निभायी है। प्रकाश के पद संभालने के बाद दवाओं और अन्य उपकरणों की आपूर्ति घटाकर दाम बढ़ाने वालों को सख्त संदेश दिया जिसके बाद मरीजों को सस्ता इलाज संभव हुआ।

जय प्रिय प्रकाश इससे पहले मंत्रिमंडल सचिवालय में विशेष सचिव का पद संभाल रहे थे। कुशल प्रशासक की पहचान बना चुके प्रकाश कई प्रमुख मंत्रालयों और विभागों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाले कार्मिक एंव प्रशिक्षण विभाग में अतिरिक्त सचिव के पद पर भी रहे हैं। इससे पहले वे उप चुनाव आयुक्त का पद भी संभाल चुके हैं। प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी प्रकाश केंद्र में आने से पहले वे मेघालय में भी महत्वपूर्ण पद पर भी रहे। वे मेघालय के खनन एवं भूविज्ञान विभाग में प्रधान सचिव की जिम्मेदरी संभाल चुके हैं। उन्हें केंद्र सरकार में सेवा के लिए राज्य की ओर से मार्च 2013 में कार्यमुक्त किया गया।

देश के वरिष्ठ अधिकारियों में गिने जाने वाले प्रकाश मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं। वे जेपी प्रकाश के नाम से मशहूर हैं। उनका जन्म 17 मई 1959 को हुआ और 1 सितंबर 1982 को प्रशासनिक सेवा में शामिल किया गया। प्रकाश ने बीए और अर्थशास्त्र में एमए की पढ़ाई की है।अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **मजबूत कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

प्रभावशाली

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

अपनी योग्यता के दम पर देश के सबसे प्रमुख और संपन्न राज्यों में से एक गुजरात के सबसे वरिष्ठ नौकरशाह की जिम्मेदारी संभाल रहे डॉ जे एन सिंह बिहार के मधुबनी जिले के निवासी है। डॉ. जगदीप नारायण सिंह को इस वर्ष जुलाई में गुजरात के मुख्य सचिव की जिम्मेदारी दी गयी है। इससे पहले अगस्त 2016 से अब तक वे गुजरात के पेट्रोलियम निकाय के प्रबंध निदेशक के तौर पर कार्यरत थे। उन्हें गुजरात पेट्रोनेट लिमिटेड का प्रबंध निदेशक भी बनाया गया था।

योग्यता के दम पर सबसे संपन्न राज्य के मुख्य सचिव

डॉ. जगदीप नारायण सिंह

डॉ. जगदीप नारायण सिंह का जन्म 2 मई 1959 को हुआ और 6 अक्टूबर 1983 में वे भारतीय प्रशानिक सेवा में शामिल हुए और उन्हें गुजरात कैडर में शामिल किया गया। उन्होंने देश के प्रतिष्ठित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से इंटरनैशनल स्टडीज़ में एमए किया है। वे मनीला के एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट से एमबीए और गुजरात के वडोदरा स्थित एम एस विश्वविद्यालय से राजनीतिक अर्थशास्त्र में पीएचडी भी कर चुके हैं।

डॉ. जगदीप नारायण सिंह ने गुजरात और केंद्र सरकार के तहत कई महत्त्वपूर्ण पदों पर रहते हुए अहम जिम्मेदरियों का निर्वहन किया है। उन्होंने उद्योग, बिजली, दूरसंचार, सूचना-प्रौद्योगिकी, राजमार्ग, जल आदि क्षेत्रों के साथ साथ मुख्य रूप से इंफ्रास्ट्रक्चर और फाइनैंस सेक्टरों में काम किया है। वे राज्य के वित्त विभाग के अतिरिक्त सचिव और कार्मिक विभाग में अतिरिक्त सचिव भी रह चुके हैं। बतौर संयुक्त प्रबंध निदेशक के रूप में भी वे गुजरात औद्योगिक विकास निगम में सेवाएं दे चुके हैं। वे सरदार सरोवर नर्मदा निगम लिमिटेड, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, गुजरात एलकेलाइज एंड कैमिकल लिमिटेड, गुजरात औद्योगिक बिजली बोर्ड और गुजरात इंडस्ट्री पॉवर कंपनी लिमिटेड आदि में वरिष्ठ पदों पर रह चुके हैं।

अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पाँच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे में 50 प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में **प्रभावशाली कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

कर्मयोद्धा

बिहार की एक ऐसी शख्सियत जो कई राज्यों में अपनी सूझ-बूझ के कारण शोहरत व उपलब्धियां हासिल कर चुके हैं। उत्तर-प्रदेश कैडर के 1983 बैच के आईपीएस अधिकारी ओम प्रकाश सिंह हाल ही में उत्तर प्रदेश के डीजीपी बनाए गए हैं इससे पहले वे औद्योगिक उपक्रमों, मेट्रो, हवाई अड्डों और सार्वजनिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा का जिम्मा संभालने वाले सीआईएसएफ के डीजी नियुक्त किये गये थे। कानून, सुरक्षा, खुफिया और अपराध की रोकथाम के साथ साथ प्रबंधन में व्यापक अनुभव रखने वाले सिंह इससे पहले राष्ट्रीय आपदा राहत बल (एनडीआरएफ) का नेतृत्व भी कर चुके हैं।

कर्मयोद्धा है वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी

ओम प्रकाश सिंह

सिंह के कार्यकाल में एनडीआरएफ ने प्राकृतिक आपदाओं के समय बहादुरी और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए लाखों लोगों की जान बचायी। जम्मू-कश्मीर की बाढ़ हो या नेपाल का प्रलयंकारी भूकंप, एनडीआरएफ के प्रयासों ने लोगों को मौत के मुंह से निकालने का काम किया और संकट में पड़े लोगों तक मदद का हाथ बढ़ाया। नेपाल सरकार के साथ साथ संयुक्त राष्ट्र ने भी इन कार्यों की सराहना करते हुए एनडीआरएफ की पीठ थपथपायी।

वे प्रधानमंत्री सुरक्षा, सीआरपीएफ और सीआईएसएफ जैसे प्रतिष्ठित बलों में उच्च पदों पर अपनी सेवाऐं दे चुके हैं। इससे पहले वे सीआईएसएफ में बतौर अतिरिक्त महानिदेश के पद पर कार्य कर चुके हैं। उस समय सिंह को देश के 59 एयरपोर्ट की सुरक्षा की मुश्किल जिम्मेदारी दी गयी थी जिसे उन्होंने बखूबी निभाया।

2 जनवरी 1960 को जन्मे ओम प्रकाश सिंह की गिनती देश के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों में होती है। मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखने वाले सिंह को कुशल प्रशासक माना जाता है। सिंह सेंट जेवियर्स कॉलेज, नेशनल डिफेन्स कॉलेज और दिल्ली विश्वविद्यालय से पढ़ाई कर चुके हैं। उन्होंने राजनीति शास्त्र में एमए और डिजास्टर मैनेजमेंट में एमबीए की पढ़ाई है। इसके अतिरिक्त उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से एमफिल की डिग्री भी हासिल की। उन्हें वीरता के लिए 1993 में भारतीय पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त 1999 में मेरिटोरियस सेवा के लिए पुलिस पदक और 2005 में उत्कृष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है। उपरोक्त पाँच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में इन्हे **कर्मयोद्धा कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया गया है।

जज्बा

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

1983 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी सुधीर प्रताप सिंह की गिनती देश के वरिष्ठतम अधिकारियों में की जाती है। उन्हें हाल ही में आतंकवाद निरोधी दस्ते (एनएसजी) का महानिदेशक नियुक्त किया गया है। मूल रूप से सारण जिले के अमनौर गांव के निवासी आईपीएस सुधीर प्रताप सिंह राजस्थान कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं और केंद्रीय मंत्री रहे भाजपा सांसद राजीव प्रताप रूडी के भाई हैं। सुधीर प्रताप सिंह की छवि निष्पक्ष, तेज-तर्रार और समझदार पुलिस अधिकारी की है।

सुरक्षा व्यवस्था को लेकर बेहद जज्बाती

सुधीर प्रताप सिंह

इससे पहले वे केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) में विशेष महानिदेशक के पद पर तैनात थे। उनका जन्म पटना में हुआ और शुरुआती शिक्षा सैनिक स्कूल तिलैया से हुई। बाद में दिल्ली विश्विद्यालय के हंसराज कॉलेज से उन्होंने स्नातक और स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। उनके पिता स्व. विश्वनाथ प्रताप सिंह राज्य सरकार में कृषि विभाग के निदेशक के पद पर थे। सुधीर के बचपन में ही उनके पिता का निधन हो गया था। माता प्रभा सिंह ने सुधीर समेत पांच भाई- बहनों को उत्तम परिवेश और शिक्षा का प्रबंध किया। सिंह ने कई अहम पदों पर रहते हुए महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभायीं। वे सीबीआई, सीआईएसएफ, सीआरपीएफ जैसे विभागों में काम कर चुके हैं। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **जज्बा कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

सक्रिय

मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखने वाले संजय कुमार हिमाचल प्रदेश कैडर के 1985 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं। उन्हें इसी वर्ष जुलाई में राष्ट्रीय आपदा राहत बल के महानिदेशक के पद पर तैनात किया गया। इससे पहले उन्हें हिमाचल सरकार द्वारा राज्य में पुलिस महानिदेशक की जिम्मादारी दी गयी थी। तीन साल के कार्यकाल के दौरान उन्होंने ने प्रदेश भर के पुलिस थानों को ऑनलाइन कराने के काम किया। सीसीटीएनएस और पासपोर्ट रिपोर्ट ऑनलाइन भेजने की व्यवस्था कर उन्होंने पुलिस और जनता के बीच संवाद के नये रास्ते खोलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

प्रतिष्ठित सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित आईपीएस

संजय कुमार

दिल्ली विश्वविद्यालय से भौतिकी में एमएससी कर चुके संजय पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहे। संजय कुमार ने हिमाचल प्रदेश और भारत सरकार में विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने कई पेंचीदा मामलों की जांच के साथ साथ कानून व्यवस्था, खुफिया, सतर्कता और आंतरिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर काम किया। लाहौल स्पीती जिले में पुलिस अधीक्षक के तौर पर उनकी बेहतरीन सेवा के लिए उन्हें विशेष पुलिस मैडल से भी सम्मानित किया गया है। उन्होंने पुलिस अधीक्षक के तौर पर हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए कई नये प्रयोग किये जिनकी मिसाल आज भी दी जाती है। जब आतंकवाद अपने चरम पर था तब कुमार ने कई जनपदों को अपने प्रयासों से इसे पूरी तरह मुक्त बनाये रखा।

उन्होंने पटना में भारतीय रेल के मुख्य सुरक्षा आयुक्त के तौर पर भी अपनी सेवाएं दीं हैं। इसके अलावा वे रेलवे में मुख्य सतर्कता अधिकारी भी रह चुके हैं। संजय कुमार की कड़ी मेहनत, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और काम के प्रति उनकी लगन को देखते हुए वर्ष 2002 में उन्हें सराहनीय सेवा के लिए पुलिस मेडल और 2011 में प्रतिष्ठित सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। कुमार की प्रतिभा को देखते हुए उन्हें अमेरिका की खुफिया एजेंसी एफबीआई के 'मेजर केस मैनेजमेंट' के लिए चुना गया। हाल ही में वे इंडोनेशिया के बाली में 'इनसार्ग टीम लीडर्स' की बैठक में भी शामिल हुए। अगले वर्ष दिसंबर में उनकी सेवा कार्यकाल पूरा हो रहा है। अपनी राष्ट्रिय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है , उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **सक्रिय कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया गया है

इरादे

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

शेखर प्रसाद सिंह नव निर्मित राज्य तेलंगाना के मुख्य सचिव हैं। उन्हें इसी वर्ष पहली जनवरी को यह महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई। एसपी सिंह के नाम से मशहूर शेखर हैदराबाद मेट्रो रेल लिमिटेड के अध्यक्ष भी हैं और भूमि प्रशासन के मुख्य आयुक्त, पंचायती राज और ग्रामीण विकास एंव ग्रामीण जल आपूर्ति के विशेष मुख्य सचिव की भी अतिरिक्त जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। 34 वर्ष के प्रशानिक सेवा के दौरान उन्होंने कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभायीं। वे विशाखापट्टनम के नगर निगम के आयुक्त, नेल्लौर श्रीकाकुलम और कुमूल के जिलाधिकारी और कलेक्टर के तौर पर सेवा कर चुके हैं।

नेक इरादे के साथ विकास के लिए प्रतिबद्ध

शेखर प्रसाद सिंह

शेखर प्रसाद सिंहवे केंद्र सरकार में भी विभिन्न पद संभाल चुके हैं। उन्हें वित्त मंत्रालय में वित्त मामलों के विभाग का निदेशक बनाया गया था। वे संयुक्त आंध्र-प्रदेश में महिला एंव बाल विकास मंत्रालय, उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय, कृषि, पर्यटन एंव संस्कृति, शहरी विकास और सड़क परिवहन आदि मंत्रालयों में सचिव, प्रधान सचिव और विशेष मुख्य सचिव की जिम्मेदारी निभा चुके हैं। तेलंगाना राज्य के गठन के बाद वे पशुपालन विभाग, डेयरी विकास एंव मछली पालन विभाग, पंचायती राज, ग्राम विकास और ग्रामीण जल आपूर्ति विभाग में भी कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा चुके हैं।

शेखर मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं। उनका जन्म 7 जनवरी 1958 में बिहार के दुमका में हुआ था जो अब झारखंड का हिस्सा है। उनके पिता एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। शेखर ने दिल्ली विश्विद्यालय से परास्नातक की पढ़ाई की। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के स्विट्नबर्न विश्विद्यालय से एमबीए की डिग्री भी हासिल की है। 10 अगस्त 1983 को प्रशानिक सेवा में शामिल होने से पहले वह दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रवक्ता के तौर पर पढ़ाते थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी शेखर शास्त्रीय संगीत में भी पारंगत हैं और राज्य स्तर के क्रिकेट खिलाड़ी भी रहे हैं। उन्होंने क्रिकेट के मैदान पर विश्वविद्यालय और राज्य का प्रतिनिधित्व किया है।अपनी राष्ट्रिय छवि,कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार,राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है ,उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **इरादे कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

जागरुक

वरिष्ठ आईएएस अधिकारी रजनी रंजन रश्मि को इसी वर्ष जुलाई में मणिपुर राज्य के मुख्य सचिव के पद पर नियुक्त किया गया है। वे इससे पहले राज्य के अतिरिक्त मुख्य सचिव का पद भी संभाल चुके हैं। रश्मि उत्तर-पूर्वी राज्य मणिपुर में कई महत्वपूर्ण प्रशासनिक जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। उन्हें उनके बेहतरीन सेवाकाल के दौरान 2008 में उन्हें उत्कृष्ट लोकप्रशासन के लिए प्रधानमंत्री सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

वन एवं पर्यावरण के विशेषज्ञ आईएएस अधिकारी

रजनी रंजन रश्मि

मूल रूप से बिहार के रहने वाले रजनी रंजन का जन्म 23 सितंबर 1957 को हुआ। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में बीए की पढ़ाई की। बाद में उन्होंने ब्रुसेल्स के ओपन युनिवर्सिटी से एमबीए किया। उन्हें 5 सितंबर 1983 को 26 वर्ष की आयु में प्रशासनिक सेवा में शामिल किया गया। वे मणिपुर कैडर का हिस्सा हैं।

1983 बैच के आईएएस अधिकारी रजनी रंजन रश्मि को वन एवं पर्यावरण का विशेषज्ञ भी माना जाता है। केंद्रीय पर्यावरण, वन एंव जलवायु परिवर्तन मंत्रालय में वे विशेष सचिव भी रह चुके हैं। वर्ष 2008 से 2013 तक वे लगातार इस पद पर रहे हैं। रश्मि की गिनती उन गिने चुने अधिकारियों में होती है जो अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। पर्यावरण मंत्रालय में रहते हुए उन्होंने पर्यावरण सहयोग, जलवायु परिवर्तन, ओजोन और दूसरी अंतर्राष्ट्रीय संधियों में भारत की ओर से वार्ताकार की भूमिका भी निभायी।

इससे पहले रजनी रंजन रश्मि को 1998 से 2001 तक वाणिज्य मंत्रालय के यूरोप विभाग के निदेशक नियुक्त किया गया था। इसके बाद उन्हें 2004 में ब्रुसेल्स में यूरोपीय संघ के साथ कारोबार के भारत के मिशन के सहालकार बनाया गया। 2014 में रजनी को उद्योग एंव वाणिज्य मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव के पद पर नियुक्त किया गया था। उद्योग मंत्रालय में यह उनका तीसरा कार्यकाल था। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **जागरुक कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

कर्मठ

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

आलोक कुमार श्रीवास्तव भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं। उन्हें अगस्त 2015 में पूर्वोत्तर राज्यों में से एक सिक्कम का मुख्य सचिव नियुक्त किया गया था। इससे पहले वे राज्य के चार जनपदों में से तीन के जिला विकास अधिकारी रह चुके हैं। उन्होंने दो जनपदों में जिलाधिकारी का पद पर भी काम किया। आलोक नई दिल्ली में सिक्किम राज्य के रजिडेंट कमिश्नर भी रह चुके हैं। उन्होंने साढ़े तीन वर्ष तक यह जिम्मेदारी बखूबी निभायी।

देश के अनुभवी लोक प्रशासकों में महत्वपूर्ण स्थान

आलोक कुमार श्रीवास्तव

उन्हें पर्यटन विभाग, उद्योग एंव वाणिज्य का आयुक्त सचिव भी बनाया जा चुका है। वे दिल्ली स्थिति मेघालय हाउस के व्यापार संवर्धन केंद्र के मुख्य कार्यकारी अधिकारी की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं।

हाल ही में आलोक कुमार श्रीवास्तव ने राज्य के राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 10 पर वाहनों के मुक्त और सुरक्षित आवागमन को लेकर सुप्रीम कोर्ट मे याचिका दायर की थी जिसके बाद केंद्र सरकार ने वहां केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की चार कंपनियां भेजे जाने की बात कही। इसके अलावे उन्होंने सरकारी कार्यक्रमों में प्लास्टिक की बोतलबंद पानी पर भी पाबंदी लगा दी थी। श्रीवास्तव मानते हैं कि इन बोतलों से प्लास्टिक कचरे का अंबार लगता जा रहा है।

33 वर्ष के प्रशासनिक सेवा काल के दौरान उन्होंने राज्य और केंद्र में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर काम करते हुए कई अहम जिम्मेदारियां निभायीं। उनकी गितनी देश के सबसे अनुभवी लोक प्रशासकों में की जाती है। कामकाज में एके श्रीवास्तव के नाम से मशहूर मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं। उनका जन्म 24 सितंबर 1959 को हुआ। वह 22 अगस्त 1984 को 25 वर्ष की आयु में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में शामिल हुए। वह सिक्किम कैडर का हिस्सा हैं। उन्होंने नागरिक शास्त्र में पीएचडी की है।अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **कर्मठ कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

शोहरत

अब बात बिहार की मिट्टी में जन्मे एक ऐसे जांबाज की जिसके नाम से असम ही नहीं, पूरे नॉर्थ-ईस्ट के अपराधी थर-थर कांपते हैं। असम पुलिस के महानिदेशक मुकेश सहाय को उत्तर पूर्वी राज्यों में खासी शोहरत मिली है। वैसे तो उनकी नियुक्ति पूर्ववर्ती तरुण गोगोई सरकार के दौरान 30 नवंबर 2015 को की गयी थी, लेकिन उनकी योग्यता और दक्षता के कारण मौजूदा सोनोवाल सरकार ने भी उन्हें उसी पद पर कायम रखा। इससे पहले वे सिविल डिफेंस के महानिदेशक और होमगार्ड के कमांडेट के साथ साथ राज्य की सीआईडी के निदेशक की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी संभाल रहे थे।

उत्तर पूर्वी राज्यों में खासी शोहरत प्राप्त आईपीएस अधिकारी

मुकेश सहाय

मुकेश सहाय का जन्म 1 मई 1958 को हुआ था और उन्होंने पहले एमएससी और फिर कानून की पढ़ाई की। इसके अलावा उन्होंने साइबर कानून की भी पढ़ाई की है। उन्हें 17 दिसंबर 1984 को भारतीय पुलिस सेवा में शामिल किया गया।

मुकेश सहाय असम के कई जिलों में एसपी और डीआईजी के रूप में काम कर चुके हैं। वे सीबीआई के एसपी और डीआई जी तथा एसएसबी के डीआईजी और आईजी की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं। वे गाजियाबाद सीबीआई ट्रेनिंग अकादमी में ट्रेनर भी रह चुके हैं। बेहतरीन सेवाओं के लिये उन्हें राष्ट्रपति पुलिस पदक से भी सम्मानित किया जा चुका है।

सहाय ने डीजीपी का पद संभालने के बाद राज्य के आम लोगों को न्याय दिलाने और पुलिस नागरिक समन्वय बढ़ाने के लिए मैत्री कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके तहत पुलिस थानों, वाहनों और काम काज का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। अपनी कुशल प्रशासनिक क्षमता के चलते उन्होंने सरकार से इसके लिए 92 करोड़ रुपये मंजूर करवा लिये। इससे प्रदेश के 51 थानों के साथ शिकायत दर्ज करने के भी आधुनिक तरीक़े अपनाये जा रहे हैं। मुकेश सहाय की गिनती उन गिने-चुने पुलिस अधिकारियों में की जाती है जिन्हें केंद्र सरकार द्वारा डीजीपी का दर्जा दिये जाने से पहले ही वे राज्य में ये जिम्मेदारी संभाल रहे थे।

अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर उन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **शोहरत कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

बेहतर

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी उत्पल कुमार सिंह को हाल ही में उत्तराखंड का मुख्य सचिव नियुक्त किया गया है। वे इस पद पर नियुक्त होने वाले 15वें अधिकारी हैं। 1986 बैच के प्रशासनिक अधिकारी उत्पल इससे पहले भी भाजपा की भुवन चंद्र खंडूरी सरकार के कार्यकाल में उत्तराखंड के प्रमुख सचिव का पद संभाल चुके हैं। ताजा नियुक्ति से पहले केंद्रीय कृषि मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। वह पिछले पांच वर्ष से प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली में तैनात थे।

बेहतर कार्यक्षमता के उदाहरण

उत्पल कुमार सिंह

मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने केंद्र सरकार से उन्हें उत्तराखंड के लिये कार्यमुक्त करने का अनुरोध किया था। केंद्र सरकार ने उनके अनुरोध को स्वीकार करते हुए उत्पल कुमार सिंह की केंद्रीय प्रतिनियुक्ति को निर्धारित समय से पहले समाप्त करने के आदेश जारी किये। बताया जाता है कि राज्य सरकार पर बेहतर प्रदर्शन के दबाव के चलते मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत को यह कदम उठाना पड़ा है।

स्वच्छ छवि के उत्पल कुमार सिंह इससे पहले उत्तराखंड में प्रमुख सचिव रहते हुए लोक निर्माण, ऊर्जा, कार्मिक, उच्च शिक्षा, कृषि, गृह जैसे अहम महकमों का दायित्व संभाल चुके हैं। उनकी गिनती तेज-तर्रार अफसरों में होती है और उन्होंने तीन दशक से अधिक के अपने प्रशासनिक सेवा के कार्यकाल को पहाड़ों से ही शुरु किया था। वे रानीखेत के उपजिलाधिकारी और नैनीताल, झांसी, मुज़फ्फरनगर, अल्मोड़ा, शाहजहांपुर, सिद्धार्थनगर और आज़मगढ़ के जिलाधिकारी भी रह चुके हैं।

उत्पल कुमार सिंह की गिनती सुलझे हुए अधिकारियों में की जाती है। सूबे के नौकरशाहों से लेकर नेताओं तक के बीच उनकी अच्छी पैठ मानी जाती है। 2020 में राज्य की बीसवीं वर्षगांठ के लिए उन्होंने विशेष लक्ष्य निर्धारित किये हैं। उत्तराखण्ड कैडर के उत्पल कुमार यू के सिंह के नाम से भी मशहूर हैं। मूल रूप से बिहार के रहने वाले सिंह का जन्म 29 जुलाई 1960 को हुआ। वे 26 वर्ष की आयु में 25 अगस्त 1986 को भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए। उन्होंने इतिहास और डेवलपमेंट स्टडीज में एमए की पढ़ाई की है। बतौर आईएएस उनका कार्यकाल जुलाई 2020 तक है। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **बेहतर कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

FAME INDIA fi 50 प्रभावशाली बिहारी

नारी शक्ति

भारतीय मीडिया जगत में मजबूत पहचान रखने वाली अनुराधा प्रसाद की चर्चा देश की प्रभावशाली हस्ती के तौर पर की जाती है। इनके पिता ठाकुर प्रसाद बिहार के प्रसिद्ध वकील होने के साथ-साथ जनसंघ के संस्थापक सदस्य भी थे. शुरुआती पढ़ाई पटना से करने के बाद इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में मास्टर्स डिग्री हासिल की.

देश की प्रभावशाली हस्ती

अनुराधा प्रसाद

इसी दरम्यान वे बिज़नेस मैगज़ीन- मनी मंत्र से जुड़ीं और यहीं से उनकी पत्रकारिता का दौर शुरू हो गया. 1990 के दशक में वो एक चर्चित महिला पत्रकार के तौर पर जानी जाने लगी, देश की 50 टॉप वीमेंन एचीवर की लिस्ट में पांच बार जगह बनाने में कामयाब रहीं अनुराधा प्रसाद ने 1993 में प्रोडक्शन हाउस बीएजी फिल्म्स की शुरुआत की और अपने मजबूत इरादे व लगातार संघर्ष की वजह से अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहीं और इस दौरान इन्होंने कई लोकप्रिय धारावाहिक भी प्रोड्यूस किये. बाद के समय में इनकी कम्पनी बीएजी फिल्म्स ने 24 नाम से न्यूज़ और एंटरटेनमेंट के कई चैनल यथा – न्यूज़ 24, ई 24 आदि की शुरुआत की जो आज टीवी इंडस्ट्री में प्रतिष्ठित चैनल की श्रेणी में है. न्यूज़ 24 भारतीय न्यूज़ इंडस्ट्री के टॉप 5 न्यूज़ चैनलों में एक है वहीं ई 24 फिल्म व बालीवुड के लोकप्रिय चैनलों में शामिल है. इनकी कंपनी रेडियो धमाल बिहार के मुज्ज़फरपुर शहर का पहला एफ एम् रेडियो चैनल है. इसके अलावे बीएजी फिल्म्स ब्राडकास्टिंग इंडस्ट्रीज के टेलीपोर्ट बिज़नेस से भी जुड़ी है. बीएजी फिल्म्स भारतीय मीडिया की पाईनिअर कम्पनी में शुमार है. ब्रॉडकास्ट मीडिया के कई अवार्ड से सम्मानित अनुराधा प्रसाद देश की मीडिया व व्यापर से जुड़ी कई प्रतिष्ठित संस्थाओ में मुख्य पदों पर है जिनमें सीआईआई/फिक्की एंटरटेनमेंट कमिटी, फिल्म डेवलपमेंट काउंसिल, उत्तराखंड. फिल्म प्रोडूसर गिल्ड प्रमुख हैं. देश की टॉप वीमेंन अचीवर की लिस्ट में शामिल मीडिया जगत की प्रसिद्ध हस्ती अनुराधा प्रसाद **फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे** की 50 प्रभावशाली की लिस्ट में **नारी शक्ति कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर है।

हौसला

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली सप्लाई करने वाली कंपनी पॉवरग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक 57 वर्षीय आई एस झा हैं। उन्हें नवंबर 2015 में इस पद पर पदोन्नत किया गया था। इससे पहले वे सितंबर 2009 से कंपनी के निदेशक (परियोजना) के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे थे। इस पद पर रहते हुए वे पारेषण और वितरण से संबंधित समस्त परियोजनाओं की प्लानिंग और निर्माण, तकनीकी, प्रबंधन, निगरानी और उसे लागू करने की जिम्मेदारी निभा रहे थे।

उर्जा के क्षेत्र में हौसलामंद व्यक्तित्व के धनी

आई एस झा

मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखने वाले आई एस झा ने एनआईटी, जमशेदपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। अपने काम के बल पर वे बिजली के क्षेत्र में जाना माना नाम बन चुके हैं। इस क्षेत्र में 35 वर्ष से ज्यादा का अनुभव रखने वाले झा ने अपने कॅरियर की शुरूआत वर्ष 1981 में एनटीपीसी में ट्रेनी के तौर पर की थी।

वर्ष 1991 में पॉवरग्रिड की स्थापना के समय से ही वे इससे जुड़े। उन्होंने कंपनी के इंजीनियरिंग, डीएमएस व कॉरपोरेट मॉनीटरिंग ग्रुप जैसे विभागों में अपनी सेवाएँ दी। कंपनी के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र के कार्यपालक निदेशक रहने के अलावा वे कॉरपोरेट निगरानी और अभियांत्रिकी विभागों के कार्यकारी निदेशक की जिम्मेदारी निभा चुके हैं। एनटीपीसी तथा पॉवरग्रिड के केंद्रीय कार्यालय एवं विभिन्न परियोजनाओं में अपनी तैनाती के दौरान झा ने प्लानिंग, आयोजना, रूपरेखा-निर्माण, इंजीनियरिंग का समय-निर्धारण, प्री-अवार्ड की निगरानी आदि में सक्रिय भूमिका निभायी।

इसके अतिरिक्त झा पॉवरग्रिड में आरजीजीवीवाई तथा एपीडीआरपी की आयोजना, इंजीनियरिंग व कार्यान्वयन की अगुवाई कर चुके हैं। उन्होंने बैंगलूरू स्थित सीपीआरआई के नियामक मंडल के सदस्य तथा विद्युत परेषण क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से गठित भारत सरकार की पॉवर कमेटी के सदस्य भी हैं। वे भारत के इंजीनियरिंग संस्थान, अमरीका के आईईईई की विद्युत इंजीनियरिंग सोसाइटी तथा फ्रांस की सीआईजीआरई जैसे व्यावसायिक निकायों से भी जुड़े रहे हैं। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों व संगोष्ठियों में विद्युत प्रणाली से संबंधित उनके लेख और तकनीक के बारे में उनके कई पत्र प्रकाशित होते रहते हैं। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढ़ाया है, उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **हौसला कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

कर्त्तव्यनिष्ठ

मशहूर हृदय रोग विशेषज्ञ पद्मश्री डॉ. जगदीश प्रसाद वर्तमान में भारत सरकार की स्वास्थ्य सेवा के महा निदेशक के पद पर पदस्थापित हैं. सन 1978 में ऐम्स, नयी दिल्ली से जूनियर रेजिडेंट, सर्जरी से अपने चिकित्सीय कार्य की शुरुआत कर कड़ी कर्तव्यनिष्ठा से उन्होंने देश में अपना एक बड़ा मुकाम बनाया है.

कर्त्तव्यनिष्ठा से देश में बड़ा मुकाम बनाने वाले

डॉ जगदीश प्रसाद

बिहार के साधारण परिवार से आने वाले डॉ. प्रसाद को सफदरजंग अस्पताल में कार्डियोथोरेपिक एंड वेसकुलर स्पेशियालिटी की स्थापना तथा कार्डियक सर्जरी में होने वाले खर्च को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण बड़ी पहचान मिली. उनके किये गए इस उत्कृष्ट कार्य के कारण उन्हें 1991 में भारत के सर्वाधिक सम्मानित पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया गया, 2001 में सफ़दरजंग अस्पताल से सम्बद्ध वर्द्धमान मेंडिकल कॉलेज की शुरुआत इनके नेतृत्व में ही हुई. ये वर्द्धमान मेंडिकल कॉलेज के फाउंडर प्रिंसिपल बनाये गये. इनकी विशेष कार्य क्षमता को देखते हुए दिसंबर 2011 में स्वास्थ्य में सुधार के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य महा निदेशक की बड़ी जवाबदेही सौंपी गयी.

देश में बेहतर स्वास्थ्य सुविधा, दवाइयों की गुणवत्ता के साथ चिकित्सा की नवीनतम तकनीकी के लिए ये विशेष कार्य कर रहे हैं. इनका चिकित्सा के क्षेत्र की मजबूती के लिए रिसर्च और डेवलपमेंट पर ज्यादा जोर है. साथ ही इनकी मंशा देश के सभी राज्यों में संबंधित मेंडिकल कॉलेजों व युनिवर्सिटी द्वारा उस राज्य के सुदूर जिलों में टेली-मेंडिसिन लैब बनवाने की है. ताकि आपात स्थिति में किसी को दूर बैठे भी उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो सके. साथ ही सभी विश्वविद्यालय एवं अस्पताल आपस में बेहतरीन तकनीक को साझा कर सकें जिससे स्वास्थ्य सेवा में क्रन्तिकारी बदलाव संभव हो.

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में देश के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाले डॉ जगदीश प्रसाद प्रतिष्ठित चिकित्सक में होने के साथ ही एक बेहद सरल व मददगार छवि व्यक्ति के तौर पर भी जाने जाते है. अपनी राष्ट्रिय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है , उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **कर्त्तव्यनिष्ठ कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है

चर्चित

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अजय भूषण पांडे यानी एबीपी देश के प्रत्येक नागरिक को विशिष्ट पहचान संख्या यानि आधार नंबर उपलब्ध कराने वाले भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईएडी) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) के पद पर हैं। 2009 में प्राधिकरण के बाद वे यह पद संभालने वाले पहले अधिकारी हैं। उनकी काबिलियत और प्रशासनिक दक्षता को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने उनकी नियुक्ति को मंजूरी दी है। उनके कार्यकाल के दौरान आधार कार्ड धारकों की संख्या 100 करोड़ से भी आगे निकल गयी।

आधार की सफलता चर्चित ब्यूरोक्रेट के नाम

डॉ. अजय भूषण पांडे

इससे अजय भूषण पांडे 2010 से यूआईडी के महानिदेशक एंव मिशन निदेशक के तौर पर कार्य कर रहे थे। वे अक्टूबर 2006 में महाराष्ट्र राज्य सरकार की बिजली वितरण कंपनी में प्रबंध निदेशक की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। वे महाराष्ट्र के सूचना तकनीक विभाग में सचिव की जिम्मेदारी भी निभा चुके हैं। वे कई अहम पदों पर रहते हुए महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा चुके पांडे अगस्त 2003 से नवंबर 2004 तक महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री के सचिव भी रहे हैं। उन्हें केंद्र सरकार के श्रम मंत्रालय में निदेशक भी नियुक्त किया जा चुका है। वे खाद्य मंत्री के निजी सचिव भी रह चुके हैं। उन्होंने जलगांव के जिलाधिकारी और राज्य में बिक्रीकर विभाग में आयुक्त का पद भी संभाला।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी अजय भूषण प्रसाद पांडे मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं। उनका जन्म 2 फरवरी 1961 को हुआ और 21 अगस्त 1984 को 23 वर्ष की आयु में उन्हें प्रशासनिक सेवा में शामिल किया गया। वे महाराष्ट्र कैडर का हिस्सा हैं। उन्होंने मिनिसोटा विश्विद्यालय से कंप्यूटर विज्ञान में एमएससी और पीएचडी की पढ़ाई की है। आईआईटी कानपुर से इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर चुके पांडे अमेरिका के मिनिसोटा विश्विद्यालय में कंप्यूटर के प्रवक्ता के तौर पर स्नातक के छात्रों को पढ़ा भी चुके हैं। वे कंप्यूटर विज्ञान पर राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में कई शोध पत्र प्रकाशित कर चुके हैं और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं में भी भाग ले चुके हैं।अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **चर्चित कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

अनुभवी

डॉक्टर कामेश्वर प्रसाद देश में चिकित्सा के क्षेत्र में सबसे अग्रणी सरकारी अस्पताल अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (ऐम्स) में न्यूरोलॉजी विभाग के प्रमुख और प्रोफेसर हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में व्यावहारिक और अध्यापन में 35 वर्ष का अनुभव रखने वाले प्रसाद राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं में 270 से अधिक शोध-पत्र प्रकाशित करा चुके हैं। उनकी ख्याति और ज्ञान को दुनिया भर में मान्यता मिली है। बिहार के मूल निवासी डॉ. कामेश्वर प्रसाद ने मेडिकल की पढ़ाई रांची के राजेंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज से की।

देश के सबसे अनुभवी चिकित्सको में शुमार

पद्मश्री डॉ कामेश्वर प्रसाद

इसके बाद वर्ष 1983 में एमडी और 1985 में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से डीएम की पढ़ाई की। उन्होने कनाडा की मैकमास्टर यूनिवर्सिटी से 1993 में क्लिनिकल एपिडेमियोलॉजी एण्ड हेल्थ रिसर्च मेथोडोलॉजी में मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री भी प्राप्तकी। क्लिनिकल न्यूरोलॉजी, आघात, साक्ष्य आधारित औषधि, नैदानिक परीक्षण, मेटा-एनालिसिस, चिकित्सा शिक्षा और क्लिनिकल एपिडेमियोलॉजी के क्षेत्र में उन्हें महारत हासिल है।

उन्हें समय-समय पर अमेरिका, कनाडा, यूके, सिंगापुर और दूसरे देशों में मेडिकल के व्याख्यानों के लिए बुलाया जाता है। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल ने उन्हें अपने संपादकीय बोर्ड का सदस्य बनाया है। शिकागो के 'इयर बुक', अमेरिकन कॉलेज ऑफ फिजिजिज जर्नल, और ऑक्सफोर्ड के जर्नलों में उनके उच्च गुणवत्ता वाले शोधपत्र प्रकाशित होते हैं। डॉ. प्रसाद चिकित्सा सेवा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एशिया प्रशांत फोरम के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति का सदस्य भी रहे हैं। वर्ष 2001 में ऐम्स में शुरू हुए स्ट्रोक विज्ञान यूनिट की स्थापना का श्रेय भी डॉ. कामेश्वर को ही जाता है। इससे पहले वे 1995 में स्थापित स्ट्रोक क्लिनिक से भी शुरुआत से जुड़े हैं। वे राष्ट्रीय स्ट्रोक नियंत्रण कार्यक्रम में भी शुरुआत से शामिल हैं। वह राष्ट्रीय समिति की कोर कमेटी, तकनीकी सलाहकार समिति और विभिन्न विशेषज्ञ समूहों के सदस्य रहे हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में योगदान के लिए वर्ष 1992 में उन्हें चौथे सबसे बडे नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उन्होंने स्टेम सेल थेरेपी पर काफी शोध किया है। उन्होंने न्यूरो साइंसेज विभाग की स्थापना में बहरीन सरकार की भी काफी मदद की। डॉ. प्रसाद द्वारा लिखी किताब 'फंडामेंटल्स ऑफ एविडेंस बेस्ट मेडिसिन' चिकित्सा के क्षेत्र में काफी लोकप्रिय है। वह चिकित्सा में पीएचडी करने वाले कई विशेषज्ञों के गाइड भी रहे हैं। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **अनुभवी कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

क्षमतावान

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

संजीव शरण को पिछले वर्ष 15 सितंबर को पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) के कार्यकारी निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया है। वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग ने उनकी नियुक्ति को मंजूरी दी। वे 31मई 2019 तक इस पद पर रहेंगे। उनके नेतृत्व में बैंक ने लखनऊ में कैम्प लगाकर एक दिन में 50 करोड़ रुपये से अधिक का लोन देकर नया रिकॉर्ड कायम किया है। इससे पहले वे पीएनबी के महाप्रबंधक के रूप में काम कर रहे थे।

विचारों को हकीकत में बदलने वाले बैंकर

संजीव शरण

30 वर्षों में अपने बैंकिंग कैरियर के दौरान संजीव शरण पीएनबी में विभिन्न क्षमताओं में काम कर चुके हैं। इन पदों में फील्ड और प्रशासनिक जिम्मेदारियां दोनों शामिल हैं। उन्होंने सभी कार्यों को कुशलता पूर्वक पूरा किया। 2011 से 2013 के दौरान पटना स्थित मध्य बिहार ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष के रूप में कामकाज और संरचनात्मक स्तर पर बड़े सकारात्मक परिवर्तन के उनके योगदान को विशेष रूप से याद किया जाता है। इसके लिये उन्हें लगातार दो वर्ष सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण बैंक अध्यक्ष के रूप में प्रोत्साहित किया गया।

बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के मामले में देश में विशिष्ट पहचान बना चुके शरण मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखते हैं। उन्होंने बीएससी की पढ़ाई की है और बाद में उन्होंने सीएआईआईबी भी किया। पढ़ने के साथ साथ बागवानी और सामाजिक सेवा में उनकी खास रुचि है।

तीन दशक से अधिक के अपने उत्कृष्ट कैरियर के दौरान वे कुशल प्रशासक और नेतृत्व क्षमता के धनी साबित हुए। अपनी प्रतिभा के बल पर उन्होंने कामकाज में नये मानक स्थापित किये। उन्हें स्पष्ठवादी और लगन का पक्का कहा जाता है। शरण के साथ काम कर चुके लोग कहते हैं कि कुशल रणनीतिकार होने के साथ-साथ विचारों को हकीकत में बदलना उनकी सबसे बड़ी खासियत है। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **क्षमतावान कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

संघर्षशील

उदय प्रताप सिंह 1984 बैच के झारखंड कैडर के भारतीय प्रशानिक सेवा के अधिकारी हैं। मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखने वाले सिंह ने राजनीति विज्ञान में एमए और एमफिल की पढ़ाई की। उन्होंने संस्कृत भाषा का अध्ययन भी किया है। हाल ही में उन्हें केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय के दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) के उपाध्यक्ष पद पर पदोन्नत किया गया है। डीडीए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था है जो राज्य का शहरी विकास और भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डेवलपमेंट के कार्य करती है।

संघर्षो से सफलता पाने वाले ब्युरोक्रेट

यू पी सिंह

इससे पहले वे पर्यटन मंत्रालय में एक अतिरिक्त सचिव के रूप में कार्यरत थे। वे इस्पात मंत्रालय में भी अतिरिक्त सचिव की जिम्मेदारी निभा चुके हैं। उन्होंने राष्ट्रीय कृषि विपणन संघ (नेफेड) के अतिरक्त प्रबंध निदेशक, खादी ग्रामोद्योग एंव ग्राम उद्योग आयोग (केवीआईसी) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) की जिम्मेदारी भी बखूबी निभायी है। मूल रूप से बिहार कैडर के अधिकारी उदय प्रताप सिंह को प्रदेश के विभाजन के बाद झारखंड कैडर दिया गया। 1990 के दशक में एक युवा अधिकारी के रूप में उन्हेंने बिहार-झारखंड के कई जिलों में बतौर जिलाधिकारी बेहतरीन कार्य किया था।

झारखंड राज्य के गठन के बाद वहा प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की भारी कमी थी. उस समय उन्हें केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर वहां भेजा गया। झारखंड के मुख्यमंत्री रघुवर दास ने उदय प्रताप सिंह के झारखंड लौटने के बाद चीफ सेक्रेटरी के रैंक पर पदोन्नत किया। उन्हें खनन तथा उद्योग जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी दे दी गयी। इसी दौरान उन्होंने एक ऐसी चिट्ठी लिखी जिसकी मुख्यमंत्री से लेकर ब्यूरोक्रैसी तक में खूब चर्चा हुई। उन्होंने राज्य के एडिशनल एडवोकेट अजीत कुमार पर सीधा हमला बोलते हुए लिखा कि उन्होंने खनन विभाग से जुड़े कई मामले को अदालत में सही तरीके से पेश नहीं किया। उनकी इस लापरवाही और चुप्पी से राज्य सरकार को 1100 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **संघर्षशील कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

नेतृत्व

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

रघुवीर शरण उपाध्याय 1985 बैच के भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी हैं। वे आयकर विभाग में प्रधान आयुक्त के पद पर तैनात हैं। इसी वर्ष फरवरी में इस पद पर पदोन्नत किया गया है। मूल रूप से बिहार से ताल्लुक रखने वाले उपाध्याय का जन्म 31 अक्टूबर 1959 को हुआ। उन्हें 17 फरवरी 1986 को राजस्व सेवा में शामिल किया गया। उन्होंने विभागीय प्रशिक्षण के बाद कई अहम पदों पर कार्य किया। कुशल प्रशासक और प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी उपाध्याय 1987 से 1995 तक एसीआईटी/डीसीआईटी के तौर पर इंदौर और भोपाल में कार्यरत थे। वहां उनपर जांच सतर्कता और अभियोजन से संबंधित मामलों की जिम्मेदारी थी।

कुशल नेतृत्व क्षमता की पहचान रखने वाले

रघुवीर शरण उपाध्याय

1995 में रघुवीर शरण उपाध्याय को कोलकाता स्थानांतरित कर दिया गया। वहां उन्होंने उपनिदेशक जांच के पद की जिम्मेदारी संभाली। 1997 में उन्हें जेसीआईटी के पद पर पदोन्नत कर दिया गया। वर्ष 2000 तक इस पद पर रहते हुए उन्होंने बी के बिरला ग्रुप, आरपीजी ग्रुप, डंकन ग्रुप और बीएम खेतान ग्रुप जैसे हाईप्रोफाइल मामलों के साथ साथ चाय कारोबार से जुड़े गुडरिक जैस कॉरपोरेट घरानों से संबंधित मामलों को निपटाने में अहम भूमिका निभायी। 2000 से 2002 के बीच उन्होंने प्रशासनिक भूमिका निभायी और इसके बाद उन्होंने स्वेच्छा से कोलकाता स्थित प्रत्यक्ष कर के क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान में अतिरिक्त निदेशक प्रशिक्षण के पद पर काम का विकल्प चुना।

रघुवीर शरण उपाध्याय की नेतृत्व क्षमता और कुशल प्रशासकीय दक्षता का ही नतीजा था कि उनके कार्यकाल में संस्थान को टैक्स रिकवरी और रीयल एस्टेट के मामले में उत्कृष्ट संस्थान का दर्जा प्राप्त हुआ। इसके अलावे पहली बार यहां भूटान के टैक्स अधिकारियों ने भी प्रशिक्षण दिया गया। 2006 में उन्हें प्रत्यक्ष कर विभाग में कमिश्नर बनाया गया। 2008 में वह मुम्बई आ गए। 2012 से वह आयकर विभाग में सतर्कता निदेशक की भूमिक में थे। उन्हें महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों की जिम्मेदारी दी गयी थी। यहां उन्होंने विभाग के अधिकारियों के खिलाफ आने वाली शिकायतों की जांच के साथ साथ कई मामलों में सीबीआई के साथ समन्वय में काम किया। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **नेतृत्व कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

प्रयत्नशील

वर्तमान में मैक्स हॉस्पिटल के डायरेक्टर व मशहूर हृदय चिकित्सक डॉ एस के सिन्हा का मुख्य लक्ष्य देश भर में बढ़ रहे हृदय रोगियों को उन्नत तकनीक से कम कीमत की बेहतर कार्डियक सर्जरी की सेवा उपलब्ध करवाने की है। इस मिशन के तहत छोटे शहरों में सामान्य अस्पतालों में भी उच्चस्तरीय कार्डियक सर्विस उपलब्ध करवाने का इनका प्रयास जारी है.

कार्डियक सर्जरी में देश के सबसे अनुभवी चिकित्सक

डॉ एस के सिन्हा

25 वर्षों के कार्डियक सर्जरी के कॅरीअर के दौरान इन्होंने नौ हजार से ज्यादा मरीजों का इलाज किया है जिससे इन्हें विभिन्न विभिन्न तरह की हार्ट से जुड़ी समस्या और परेशानियों वाले व्यक्तियों के इलाज, सर्जरी का लम्बा अनुभवरहा है. देश में हृदय रोगियों के लिए बेहतर कार्य करने कर रहे डॉ सिन्हा 2009 से मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में डायरेक्टर – सीटीवीएस हैं. 1996 से 2009 तक बत्रा हॉस्पिटल के कार्डियक सर्जरी डिपार्टमेंट के हेड के तौर पर इन्होंने एडमिनिस्ट्रेटिव लीडर और क्लिनिकल मेंटर दोनों जिम्मेवारी बखूबी निभाई है। ये भावी कार्डियक सर्जन को बेहतर व अनुभवी बनाने में पूरी मदद करते हैं. इनका मकसद भविष्य में भी देश को बेहतर से बेहतर कार्डियक सर्जन देने का है. इन्होंने पुणे से एमबीबीएस व पटना से एम् एस करने के बाद 1986 में पीजीआई चंडीगढ़ से एमसीएच किया।इन्होंने हेल्थ सेक्टर को नजदीक से समझने के लिए 2012 में सिक्किम मणिपाल यूनिवर्सिटी व हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल, बोस्टन से हेल्थकेयर सर्विस में एमबीए भी किया है. इनके अब तक 27 से ज्यादा आर्टिकल प्रकाशित हुए है, कार्डियोलॉजी से जुड़ी कई संस्थाओं व सोसाइटी के आजीवन सदस्य डॉ एस के सिन्हा का लक्ष्य इनके गृहराज्य बिहार में हृदय चिकित्सा के क्षेत्र में बड़ा कार्य करने की है ताकि यहाँ के लोगों को कम कीमत पर उन्नत हृदय चिकित्सा आसानी से उपलब्ध हो सके और आस पास के राज्यों के लोगों को भी हृदय चिकित्सा के लिए दूर भटकना नहीं पड़े. **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **प्रयत्नशील कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है.

जवाबदेह

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

भारत में वकीलों के सबसे बड़े संगठन "बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया" के चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा सारण कमिश्नरी के गोपालगंज जिले के निवासी है , देश भर के अधिवक्ताओं के हित व सामाजिक सुरक्षा में बेहतर बदलाव के लिए प्रयासरत मनन कुमार मिश्रा की प्राथमिकताओ में क़ानूनी शिक्षा में सुधार प्रमुख स्थान रखता है.इनके पिता गोपालगंज के जाने माने अधिवक्ता थे .

अधिवक्ताओं के हित व सुरक्षा के लिए प्रयासरत

मनन मिश्रा

सन 1980 में पटना लॉ कॉलेज से एल एल बी करने के बाद ये पटना हाई कोर्ट में वकालत के पेशे से जुड़े . वर्ष 1984 में बिहार अधिवक्ता कल्याण समिति के प्रदेश महासचिव व 1986 में बिहार यंग लायर्स एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष बने. ये बिहार स्टेट बार काउंसिल के लगातार चार बार सदस्य निर्वाचित हुए . इनके नाम " यंगेस्ट मेम्बर ऑफ़ एनी बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया " का रिकॉर्ड भी रहा है .

पटना हाईकोर्ट में 2007 में वरीय अधिवक्ता घोषित होने वाले मनन कुमार मिश्रा इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी के बिहार ब्रांच के संरक्षक भी रहे है . तेलंगाना , पटियाला या तमिलनाडु जहाँ भी वकीलों से जुड़े मुद्दे हो "बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया" के चेयरमैन होने के नाते इनकी भूमिका अहम् स्थान रखती है , सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इंडिया के वरीय अधिवक्ता मनन कुमार मिश्रा बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया के चेयरमैन के रूप में कड़ी लगन व निष्ठा से देश भर के अधिवक्ताओं के अधिकार को मजबूत करने के लिए जुटे है . वकीलों को क़ानूनी फेर बदल व सुधार से अपडेट रहने के लिए इन्होने बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया द्वारा समय समय पर ट्रेनिंग व सेमिनार का आयोजन करवानी शुरू करवाई .

देश भर के अधिवक्ताओं के बीच मनन कुमार मिश्रा का बहुत बड़ा प्रभाव है। **फेम इंडिया मैगज़ीन के लिए एशिया पोस्ट** द्वारा किये गए 50 प्रभावशाली व्यक्ति 2018 सर्वे में बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया के चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा **जवाबदेह कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर है .

FAME INDIA fi 50 प्रभावशाली बिहारी

शानदार

'मेरे दौर में ये कैसी राज़दारी है, ज़मीन हल्की है हवा भारी है'. राणा यशवंत की कलम से निकला ये शेर समय का सच समेटे हुए है. अपनी सोच, समझ और सवालों के लिहाज से भी वे इतने ही सधे और सजग-से हैं. यशवंत जब कभी कुछ कहते हैं लगता है कोई सीधी लकीर खिंचती चली जा रही है. एकदम तरतीब में, मानो पूरी तैयारी से बोल रहे हों, जबकि सच ये है कि वे इसी तरह बोलते हैं. साफ समझ, सधी जुबान. यशवंत की ऐसी सोच, समझ उनकी गांव की पृष्ठभूमि के कारण ही है और आज भी वे अपने गांव से जुड़े हुए हैं. बिहार के छपरा जिले के रामपुर कलां गांव में पैदा हुए यशवंत को आज टीवी न्यूज इडस्ट्री के नायकों में गिना जाता है.

बेहतरीन सोच-समझ और मजबूत लेखनी का दम रखने वाले

राणा यशवंत

अपनी प्रतिबद्धताओं और प्रतिभा के चलते उन्होंने व्यवस्था और समाज को झकझोरा है. इंडिया न्यूज में बतौर मैनेजिंग एडिटर उन्होंने आसाराम, रामपाल, रामरहीम जैसे पाखंडी बाबाओं के खिलाफ अभियान चलाया तो विदर्भ, मराठवाड़ा, बुंदेलखंड और रुहेलखंड में किसानों की हालत को लेकर सीरीज चलाई. सता-व्यवस्था की सांठगांठ पर बार बार बड़ी बहसों को जरिए हमले करते ही रहते हैं . यशवंत के शो "अर्धसत्य" का असर ये है कि प्रधानमंत्री ने पत्र लिखकर उसकी तारीफ की ,देश में पत्रकारिता के प्रतिष्ठित सम्मान "रेड इंक अवॉर्ड" और "अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार सम्मान" भी "अर्धसत्य" को मिल चुका है. इनका मानना हैं कि जो सही है उसको ही आवाज दो , किसी पार्टी या सरकार को सही या गलत साबित करने का ठेका लिए क्यो फिरना ?

आईआईएमसी से 1997 में निकले राणा यशवंत ने "ज़ी न्यूज" से अपने करियर की शुरुआत की और "आजतक" में 9 साल काम किया. "आजतक" में राणा यशवंत ने बतौर आउटपुट हेड कई प्रयोग किए जिनकी सराहना इंडस्ट्री में हुई. मसलन, आरुषि हत्याकांड पर सीरीज. 2007 क्रिकेट वर्ल्डकप के दौरान क्रिकेट कैफे, करगिल के 10 साल या फिर मुंबई हमला जो हमने देखा.

यशवंत टीवी पत्रकारिता के उन विरले लोगों में हैं जिनकी पकड़ राजनीति और समाज के साथ-साथ साहित्य और संस्कृति पर भी बराबर की है. यशवंत का काव्य संग्रह "अंधेरी गली का चांद" 2016 में आधार प्रकाशन से आया. उनकी कविताओं की तरीफ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त केदारनाथ सिंह से लेकर अरुण कमल, उदय प्रकाश, राजेश जोशी और मंगलेश डबराल जैसे बड़े कवियों ने की है. यशवंत अपनी नज्मों के अलबम पर भी काम कर रहे हैं. हिंदी टीवी पत्रकारिता के जरिए पिछले 20 साल से देश और समाज की हर जरुरी बात रखने-कहनेवाले राणा यशवंत के लिए जीवन का मतलब उसका अर्थवान होना है. चाहे वह सोच हो या फिर साहस. **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **शानदार कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

ऊर्जावान

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

देश की राजधानी दिल्ली के सबसे बड़े हिस्से रोशन करने वाली विद्युत वितरण कंपनी का सीईओ होना एक ऐसा गौरवशाली पद है जो बेहद जिम्मेदारी भरा भी है। इस चुनौती पर खरे उतरे हैं बिहार के अमल सिन्हा जो सरकारी और निजी भागीदारी वाली बिजली कंपनी बीएसईएस राजधानी पॉवर लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। उनके नेतृत्व में कंपनी ने हाल ही में बिजली के बिल के कैशलैस भुगतान के लिए उपभोक्ताओं को कई नये विकल्प उपलब्ध कराये हैं जिसकी खासी प्रशंसा हुई है।

बेहतर नीति निर्माता व बेहद ऊर्जावान

अमल सिन्हा

मूल रूप से बिहार के रहने वाले अमल सिन्हा एक सर्टिफाइड चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) और कॉस्ट अकाउंटिंग के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने 1983-86 तक सीए और 1985-88 तक कॉस्ट अकाउंटेंसी की पढ़ाई की। इससे पहले उन्होंने 1980-83 में दिल्ली विश्विद्यालय के प्रतिष्ठित श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से बीएस ऑनर्स की पढ़ाई की। इससे पहले उन्होंने 1975-80 तक दिल्ली के सरदार पटेल विद्यालय से कॉमर्स में इंटरमीडिएट किया। उनकी स्कूली शिक्षा दिल्ली के समर फील्ड स्कूल से हुई है।

अमल सिन्हा बिजली वितरण, नियामक, कानूनी मामलों, कॉर्पोरेट फाइनेंस, वित्तीय पुनर्गठन और फंडिंग जुटाने, रणनीति बनाने, बजटीय और वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण और लेखा परीक्षा के मामलों में विशेषज्ञ हैं। पिछले तीस वर्षों से विद्युत क्षेत्र में काम कर रहे सिन्हा इस क्षेत्र में विशेष पहचान बना चुके हैं। वे कुशल प्रशासक, नीति निर्माता और रणनीतिकार हैं। इससे पहले वे कंपनी के सीएफओ और वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। उन्हें बीएसईएस यमुना पॉवर लिमिटिड में भी निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया था। वे एल एंड टी, एस्कॉर्ट्स समूह, बीएसईएस राजधानी बिजली लिमिटेड और रिलांयस की विभिन्न कंपनियों में कई वरिष्ठ पदों पर काम कर चुके हैं। उन्होंने 1990 से 2005 तक पंद्रह वर्ष तक एस्कॉर्ट्स में बतौर महाप्रबंध काम किया। वहां उन्हें टेलीकॉम उपकरण, रेलवे उपकरण और कार्पोरेट मामलों का वित्तीय प्रमुख बनाया गया। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **ऊर्जावान कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

FAME INDIA Fi

50 प्रभावशाली बिहारी

आवाज

एनडीटीवी के सीनियर एग्जीक्यूटिव एडिटर रवीश कुमार की अपनी शैली अपना ढंग, बेहद साधारण अंदाज में बहुत बड़ी बात कह देने का तरीका इन्हें एक अलग पहचान देता है. इनके पॉपुलर प्रोग्राम में "प्राइम टाइम", "हम लोग" और "रवीश की रिपोर्ट" शामिल है. न्यूज़ इंडस्ट्रीमें लगातार प्रयोग करने की इनकी कोशिश लोगों को बहुत पसंद है वहीं बड़े से बड़े राजनेताओ को अपने तर्क से निरुत्तर कर देना इन्हें आता है.

अंदाजे बंया ही कुछ और है जिनका

रवीश कुमार

इन्हें हिंदी पत्रकारिता और रचनात्मक साहित्य के लिए राष्ट्रपति द्वारा 2010 में प्रतिष्ठित गणेश शंकर विद्यार्थी अवार्ड से सम्मानित किया गया है. इन्हें 2013 में रामनाथ गोयनका एक्सीलेंस इन जर्नलिज्म अवार्ड मिला और 2014 में इंडियन न्यूज़ टेलीविज़न अवार्ड में सर्वश्रेष्ठ न्यूज़ एंकर का ख़िताब भी मिला है. रवीश कुमार 2016 के इंडियन एक्सप्रेस की 100 सबसे प्रभावशाली भारतीयों की सूची में भी शामिल है.

इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मास कम्युनिकेशन से जर्नलिज्म में पोस्ट ग्रेजुएट रवीश ने अपनी डिग्री की पढ़ाई देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से की है. इनका जन्म बिहार में पश्चिमी चंपारण जिले के मोतिहारी में हुआ, शुरुआती शिक्षा लोयोला हाई स्कूल, पटना में हुई.

एनडीटीवी से 15 सालो से जुड़े रवीश की पहचान सामाजिक मुद्दों पर आधारित कार्यक्रम " रवीश की रिपोर्ट " से व आम लोगों की राय से जुड़ी "हम लोग" नाम के कार्यक्रम से बढ़ी, पत्रकारिता की पढ़ाई करने वाले युवाओं के आदर्श के रूप में स्थापित रवीश कुमार बहुआयामी व्यक्तित्व जैसे कवि, कहानीकार, लेखक, फिल्म समीक्षक इत्यादि है.इनका एक अपना ब्लॉग भी है. इनकी लिखी किताबों में 2010 में प्रकाशित "देखते रहिये" और 2015 में प्रकाशित "इश्क में शहर होना" शामिल है.

एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन के 50 प्रभावशाली व्यक्तियों के सर्वे में ख्याति-प्राप्त पत्रकार रवीश कुमार **आवाज कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर हैं।

युवा

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

देश के कॉर्पोरेट जगत के नौजवान सीईओ की लिस्ट में प्रवीर कुमार का नाम प्रमुखता से शामिल है. बिहार के शिक्षाविद् परिवार से आने वाले कुमार ने हिंदी माध्यम से बिहार के मुजफ्फरपुर में अपनी पढ़ाई पूरी की. इनकी सफलता के मुकाम ने छोटे शहर या परिवेश के युवाओं के बीच इन्हे ऐसे आदर्श के तौर पर स्थापित किया कि प्रवीर कुमार के जैसा जज्बा, लगन, ईमानदारी ,मेहनत और कमिंटमेंट हो तो छोटे से शहर या हिंदी माध्यम का होना जीवन की सफलता में बाधक न बनता बल्कि कामयाबी का मुकाम बनाता है.

युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत

प्रवीर कुमार

इन्होंने एमबीए की डिग्री हासिल करने के बाद अपने कैरियर की शुरुआत 1996 में एशियन पेंट्स से की. अपनी नेतृत्व क्षमता और लगन से इन्होंने 20 वर्षो के कैरियर में देश के सबसे बड़े औद्योगिक घरानो जैसे भारती एयरटेल, आईडिया सेलुलर, टाटा डोकोमो आदि में मुख्य पदों पर काम किया है, अपनी कार्यशैली व व्यावसायिक समझ के बूते 2010 में 37 वर्ष की आयु में ये टाटा ग्रुप के सबसे नौजवान सीईओ बने, वर्तमान में रिलायंस जिओ इन्फोकॉम लिमिटेड में सीईओ प्रवीर कुमार को बाज़ार की समझ का माहिर माना जाता है, किसी भी परिस्थिति में टीम को उत्साहित बना कर रखने की क्षमता ने इन्हें साल दर साल कॉर्पोरेट जगत में नयी ऊंचाईया दी हैं. किसी भी चुनौती का सही तरीके से हल निकालने में निपुण प्रवीर कुमार अपनी कार्य कुशलता, सहयोगी रवैये व नेतृत्व क्षमता के कारण मैनेजमेंट वाले युवाओं के लिए रोल माडल हैं.

आम तौर पर कॉर्पोरेट सेक्टर के लोगों का झुकाव सामाजिक दायित्व की ओर कम ही देखा गया है परन्तु समाज के प्रति दायित्वबोध रखने वाले प्रवीर कुमार का जुड़ाव कई गैर सरकारी संस्थाओ से भी है, मानव स्वाबलंबन जैसे कई समाज विकास के क्षेत्र में अनेक कार्य करते रहें है. उन्होने अब तक 1000 से ज्यादा लोगो को स्वाबलंबन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बाज़ार और अध्यात्म दोनों में प्रवीणता इन्हें एक विशिष्ट आयाम देती है. कॉर्पोरेट और सामाजिक दायित्व दोनो में बेहतर कार्य के लिये चर्चित प्रवीर कुमार अपने कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश के कॉरपोरेट जगत में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहारी होने का मान बढाया है ,उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे में देश के 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **युवा कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है.

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

उत्कृष्ट

मशहूर कैंसर विशेषज्ञ डॉक्टर अंशुमान कुमार दिल्ली के धर्मशिला नारायण सुपरस्पेशियलिटी हॉस्पिटल में निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। बिहार में बाढ़ नामक एक छोटे से कस्बे में जन्मे व साधारण परिवार से आने वाले डॉ. अंशुमान कुमार कैंसर की बीमारी के इलाज के साथ उससे जुड़ी नयी तकनीकों को खोजने में जुटे हैं। कैंसर के महंगे इलाज कैसे कम खर्च में संभव बनाया जाये और किस प्रकार लोगों में कैंसर के प्रति जागरुकता तेजी से फैले, वे इस दिशा में लगातार कार्यरत हैं। उनकी ओर से किये जा रहे इन उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें 2014 में बेस्ट ऑन्कोलॉजिस्ट के सम्मान से सम्मानित किया गया है।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में देश के लिए उत्कृष्ट काम

डॉ अंशुमान कुमार

फिक्की ने डॉक्टर अंशुमान कुमार को भारत मे ऑन्कोलॉजी को लेकर गाइड लाइन बनाने में उनके अदुतीय और सराहनीय योगदान और सुझाव के लिए सम्मानित किया. डॉक्टर अंशुमान की ओर से समाज में सवाथय के प्रति जागरूकता लाने और एक स्वथ्य समाज के सपने को साकार करने की दिशा में किये जा रहे प्रयासों को समझते हुए साल 2016 में उन्हें झारखंड में बिरसामुंडा पुरस्कार से सम्मानित किया गया. जो लोग अस्पताल नही आ सकते ऐसे लोगो के बीच दिल्ली के करीब ग्रेटर नोएडा में खुद डॉक्टर अंशुमान हफ्ते में एक बार जमीन में दरी पर बैठकर इलाज करने से भी ज़रा भी नही हिचकते। इनका चिकित्सा के क्षेत्र की मजबूती के लिए रिसर्च और डेवलपमेंट पर सबसे ज्यादा जोर है। साथ ही इनकी कोशिश है कि कैंसर जैसी बीमारी का इलाज उचित तरीके से सही समय पर और कम खर्च में हो पाये ताकि किसी की जान इलाज के अभाव में ना जाये। इसके लिए डॉक्टर अंशुमान खुद जगह जगह ना सिर्फ खुद सर्जरी करने जाते हैं, बल्कि कम संसाधनों में कैसे कैंसर की सर्जरी की जाये ये भी सिखा रहे हैं। इनकी कोशिश है कि आपात स्थिति में किसी को दूर बैठे भी उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो सके। इसके अलावा सभी विश्वविद्यालय एवं अस्पताल आपस में बेहतरीन तकनीक को साझा कर सकें जिससे स्वास्थ्य सेवा में क्रन्तिकारी बदलाव संभव हो।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में देश के लिए उत्कृष्ट काम करने वाले डॉ अंशुमान कुमार सिर्फ देश ही नही बल्कि विदेशों में भी कैसे वही पर इलाज संभव बनाया जाये ताकि अपने देश मे ही मरीज़ों को इलाज मिल पाये इसके लिए मेडिकल टूरिज्म बढ़ाने की दिशा में भी बड़ा काम कर रहे हैं। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है , उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे में देश के 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **उत्कृष्ट कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

विशिष्ट

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

उत्तर प्रदेश में पुलिस महानिदेशक के पद पर तैनात सुतपा सान्याल राज्य की सबसे वरिष्ठ महिला आईपीएस अधिकारी हैं। उन्हें महिलाओं और बच्चों पर होने वाली हिंसा के मामलों पर नियंत्रण की विशेष रूप से जिम्मेदारी दी गयी है। पुलिस के महिला सम्मान प्रकोष्ठ की प्रमुख रहते हुए उन्होंने प्रदेश की 13 करोड़ से ज्यादा महिलाओं और बच्चों के सशक्तिकरण के कार्यक्रम चलाये। उन्होंने महिला अपराध की शिकायत के लिए भारत में पहली बार विकल्प नाम के अलग पुलिस पोर्टल की शुरुआत की।

विशिष्ट एवं उत्कृष्ट सेवा पुलिस मेडल से सम्मानित

सुतपा सान्याल

सुतपा सान्याल को केंद्रीय गृहमंत्रालय द्वारा सबसे ज़्यादा आबादी वाले राज्य में मानव तस्करी रोकने की भी ज़िम्मेदारी दी गयी है। वे यूनिसेफ, आरएमएल राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय और गैर सरकारी संगठन के साथ मिलकर पुलिस थानों को बच्चों के अनुकूल बनाने और किशोरों के लिए विशेष थानों का काम भी कर रही हैं।

देश की सबसे वरिष्ठ माहिला आईपीएस अधिकारियों में से एक सुतपा को उनकी विशेष सेवा और लगन के लिये राष्ट्रपति द्वारा विशिष्ट सेवा पुलिस मेडल और दीर्घ एवं उत्कृष्ट सेवा पुलिस मेडल से भी सम्मानित किया गया है। राज्यपाल राम नाइक भी उन्हें गुरुदेव रवींद्र नाथ सम्मान से सम्मानित कर चुके हैं। नारी सशक्तिकरण और बाल विकास के क्षेत्र में उनके कार्यों को न केवल भारत में बल्कि ब्रिटेन और अमरीका में वहां की सरकारों तथा इंटरपोल के द्वारा भी सराहा जा चुका है। अपने काम के कारण वे अक्सर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में रहती हैं। महिला एवं बाल अधिकारों को मजबूत करने और अपराध पर नियंत्रण के मामले में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं विशेषज्ञ के रूप में उनसे सलाह भी लेती हैं। पुलिस अधिकारी होने के साथ-साथ सान्याल उत्तर प्रदेश में मानवाधिकार आयोग की जिम्मेदारी भी संभाल रही हैं।

मूल रूप से बिहार की रहने वाली सुतपा सान्याल का जन्म 11 मई 1957 को हुआ था। उन्हें 4 जनवरी 1985 को आईपीएस अधिकारी के तौर पर उन्हें उत्तरप्रदेश केडर में शामिल किया गया। उन्होंने पटना विश्विद्यालय से भी अर्थशास्त्र में एमए किया। वे पुलिस सेवा में शामिल होने से पहले 1983 में पटना विश्विद्यालय में पढ़ा भी चुकी हैं। उनके पिता राज्य सिविल सेवा अधिकारी थे और उनकी प्रेरणा से ही वे पुलिस सेवा का रास्ता चुना। उन्होंने अमेरिका की जॉन हॉपकिंस विश्विद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ बिज़नेस से भी डिग्रियां हासिल की हैं। अपनी राष्ट्रिय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है , उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हे **विशिष्ट कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

विलक्षण

एक ऐसी शख्सियत, जो नौकरशाही से लेकर शिक्षा, चिकित्सा, कृषि और आईटी आदि तमाम व्यवसायों में सफलता के झंडे गाड़ने के लिये जाने जाते हैं। इस हस्ती का नाम है संत कुमार चौधरी जो आज देश के कई राज्यों में अस्पतालों, कॉलेजों, मेडिकल व इंजीनियरिंग संस्थानों व कृषि शोधशालाओं का सफल संचालन कर रहे हैं। बिहार में मिथिला की धरती में 5 जनवरी 1959 को जन्मे व पले बढ़े और साइंस से ग्रैजुएशन करने के बाद संत कुमार चौधरी ने देश सेवा के लिये नौकरशाही में जाने का फैसला किया।

शिक्षा की अलख जगाने वाले विलक्षण समाजसेवी

संत कुमार चौधरी

वे 1983 में तत्कालीन मुख्यमंत्री वसंत राव पाटील के निजी सचिव भी बने। वहां रह कर उन्होंने देखा कि आम आदमी किन-किन समस्याओं से जूझ रहा है। उन्होंने पाया कि सरकार और राजनेता चाह कर भी सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर पा रहे क्योंकि सरकारी तंत्र और जनता के बीच कोई कड़ी नहीं है।

उन्होंने देखा कि कोऑपरेटिव सोसाइटियों और स्वयंसेवी संस्थाओं के जरिये जन समस्याओं तक पहुंचा जा सकता है। उन्होंने स्वास्थ्य के क्षेत्र से काम शुरु किया और देश के कई राज्यों में शंकर नेत्रालय की शाखाएं खोलीं। तमिलनाडु, बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, झारखंड व ओडिशा आदि राज्यों में काफी लोग लाभान्वित हुए तो उनका उत्साह बढ़ा। उन्होंने पांच ट्रस्ट व सोसाइटियों का गठन किया और उनके जरिये सामान्य शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कृषि शिक्षा और चिकित्सा सुविधाएं आदि का प्रसार किया। बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, झारखंड और ओडिशा में उनके दो दर्जन से भी अधिक शिक्षण संस्थान हैं। इनमें से कई संस्थानों में वे गरीब और मेधावी छात्रों को मुफ्त शिक्षा व स्कॉलरशिप भी मुहैया कराते हैं।

हालांकि उन्होंने समाजसेवा को अपना परम ध्येय माना, लेकिन केंद्र व राज्य सरकारों ने उन्हें कई सलाहकार बोर्डों व शैक्षणिक मंडलों में भी शामिल किया। संत कुमार चौधरी देश के करीब आधा दर्जन सरकारी संस्थानों में निदेशक व मैनेजमेंट सदस्य हैं। इसके अलावा वे करीब दर्जन भर सरकारी व अर्ध सरकारी संस्थानों का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वे 25 संस्थानों के संस्थापक रह चुके हैं और बतौर संपादक कई संस्थानों से पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित करते हैं। बिहार, खासकर मिथिला की धरती से उनका विशेष जुड़ाव रहा है और वे मुंबई की प्रतिष्ठित मैथिली मित्र मंडल के पैट्रन भी हैं। इस विभूति को कई दर्जन राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जिनका सिलसिला अभी भी जारी है।

अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **विलक्षण कैटगरी** में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर पाया है।

उड़ान

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

किसी एविएशन कंपनी का निदेशक बनना एक ऐसी मंजिल है जो कॉरपोरेट जगत के किसी भी शख्स के लिये सपनों की ऊंची उड़ान भरने जैसा है, लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने वाले कम ही लोग हैं। संजय झा इंटर ग्लोबल एविएशन लिमिटेड की इंडिगो विमान सेवा के निदेशक हैं। यहां उन्हें कंपनी की ओर से खरीद की जिम्मेदारी दी गयी है। वे जून 2015 से इस पद पर कार्य कर रहे हैं। इससे पहले वे भारती रिटेल, कोका-कोला, एमवे इंडिया और डाबर जैसी नामचीन कंपनियों में महत्वपूर्ण पद संभाल चुके हैं।

सफलता की ऊंची उड़ान भरते संजय झा

भारती रिटेल में उन्हें सभी खरीद की जिम्मेदारी दी गयी थी। यहां उन्होंने 2008 से जून 2015 तक काम किया। कोका-कोला में उन्होंने 2007-08 नये उत्पादों के लिए सप्लाई चेन विकसित करने का काम कर रहे थे। एमवे में भी उन्हें आये उत्पादों सप्लाई का काम दिया गया था। इससे पहले डाबर में उन्होंने वर्ष 2002 से 2005 तक काम किया। यहां उन्हें ग्वार इसबगोल शहद और अन्य जड़ी बूटियों सहित कमोडिट सप्लाई की जिम्मेदारी दी गयी थी।

आपूर्ति श्रृंखला और खरीद में 17 वर्ष का अनुभव रखने वाले संजय प्रबंधन क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। उन्होंने ज्यादातर समय एफएमसीजी उत्पादों के खुदरा कारोबार विकसित करने, पूंजीगत सामान और सेवाओं की खरीद में कच्चे माल, पैकेजिंग, उत्पादन और आयात का संचालन किया है। वे कुशल प्रशासक होने के साथ साथ अच्छे टीम लीडर भी हैं। कई मौकों पर वे अपनी कुशलता साबित कर चुके हैं।

मूल रूप से बिहार के रहने वाले संजय ने 1997-99 के दौरान भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) अहमदाबाद से एमबीए की पढ़ाई की है। उन्हें मोलभाव, सप्लाई चेन प्रबंधन, रणनीति, कारोबारी योजना, खरीद और खुदरा कारोबार का महारथी माना जाता है। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर उन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **उड़ान कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

बाजीगर

देश के टॉप न्यूज चैनल में शुमार न्यूज नेशन के प्रेसिडेंट (सेल्स एंड मार्केटिंग) अभय के.ओझा एक ऐसी शख्सियत है जिसने टीवी की सतरंगी दुनिया को दिखा दिया कि इस चमक-दमक भरे कैनवस पर असली रंग तो सिर्फ मेहनत की मिट्टी से ही भरे जा सकते हैं। वे आज उस मुकाम पर हैं जहां सफलता उनके कदमों को चूमती है। टीवी व्यवसाय को नयी दिशा दिखाने वाले ये माहिर खिलाड़ी न्यूज नेशन चैनल के सेल्स व मार्केटिंग के अध्यक्ष हैं और इस चैनल को आसमान की बुलंदियों पर पहुंचाने में उनका बड़ा योगदान है।

चुनौतियों को अवसर में बदलने वाले बाजीगर

अभय के ओझा

बिहार के वैशाली-मुजफ्फरपुर की ऐतिहासिक धरती से जुड़े अभय के ओझा के पिता रेलवे पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी थे जिनसे अनुशासित जीवनशैली उन्हें विरासत में मिली। स्कूली शिक्षा मसूरी के मशहूर ओक ग्रोव स्कूल में हुई जहां उन्होंने जीवन मूल्यों को समग्रता से सीखा। बचपन से मेधावी रहे अभय का दाखिला पटना के प्रतिष्ठित साइंस कॉलेज और फिर दिल्ली विश्वविद्यालय में हो गया। उन्होंने अर्थशास्त्र में ऑनर्स के साथ ग्रैजुएशन करने के बाद नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ऐडवरटाइजिंग से मैनेजमेंट का कोर्स किया। उन्होंने अपने कॅरीयर की शुरुआत टीवी टुडे से की जहां उन्हें आजतक, हेडलाइंस टुडे, तेज व दिल्ली आजतक जैसे चैनलों की लांचिंग टीम का हिस्सा बनने का मौका मिला। उन्होंने हमेशा गुणवत्ता भरी मेहनत और स्पष्ट सिद्धांतों पर भरोसा किया और यही वजह रही कि कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

पहली नौकरी में ही सफलता के झंडे गाड़ने के कारण अभय के ओझा की गिनती मीडिया जगत के प्रमुख योजनाकारों में की जाने लगी। जब नेटवर्क 18 में असि. वाइस प्रेसिडेंट बनने का मौका मिला तो वहां उन्हें ग्रुप के सबसे कमजोर रहे चैनल आईबीएन-7 की जिम्मेदारी दी गयी। अपनी मेहनत और सूझ-बूझ से कम समय में ही उन्होंने इस चैनल को नेटवर्क 18 के सबसे मजबूत चैनलों में ला खड़ा किया। उनकी शोहरत का ही असर था कि अंबानी ग्रुप ने जब बिग मैजिक की शुरुआत की तो उन्हें कंट्री हेड (रेवेन्यु) बनाया गया। इसके बाद कुछ समय के लिये टीवी-9 में भी उन्होंने अपनी योग्यता का प्रदर्शन किया। जब न्यूज नेशन की शुरुआत हुई तो इसके प्रबंधकों ने अभय के ओझा को सेल्स एंड मार्केटिंग का प्रमुख बनाया और बाजार के आंकड़े गवाह हैं कि कम समय में ही इस चैनल ने न्यूज टेलीविजन की दुनिया में एक अहम मुकाम हासिल कर लिया। हाल ही में इस ग्रुप ने न्यूज स्टेट (उत्तर प्रदेश) भी लांच किया है जो राज्य का नंबर वन चैनल बन गया है।

अपने 19 वर्षों के कॅरीयर में अभय के ओझा ने कई बार खुद को साबित किया है और उन्हें कई सम्मान भी हासिल हुए। कई चैनलों में स्टार परफॉर्मर का ओहदा हासिल कर चुके ओझा को 2012 में ग्लोबल यूथ मार्केटिंग फोरम ने 'स्टार यूथ अचीवर अवॉर्ड' से भी सम्मानित किया है। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है। उपरोक्त पाँच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **बाजीगर कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

कुशल प्रबंधक

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

इन्हे देश में एच आर पॉलिसी बनाने और बेहतर तरीके से उसे लागू करने का महारथी माना जाता है, हम बात कर रहे है डॉ. जयंत कुमार की, जो प्रतिष्ठित टाटा समूह की कंपनी टाटा पॉवर के चीफ ह्यूमन रिसोर्स ऑफिसर हैं। टाटा को देश की सबसे बेहतरीन इम्प्लाई फ्रेंडली कंपनी में एक माना जाता है और इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका डॉ जयंत कुमार निभा रहे है ,इनके जिम्मे कंपनी के लिये काबिल कर्मचारियों की पहचान, नियुक्ति के साथ साथ कंपनी में उनके लिये सुविधाजनक माहौल और उनके अधिकार की सुरक्षा की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी हैं।

कुशल प्रबंधन क्षमता से देश में अपनी पहचान बनाई

जयंत कुमार

एच आर में वर्ष 1994 से अब तक इनका एक लंबा अनुभव रहा है। इन्होंने अब तक कई नामी कंपनियों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभायीं। कुशल प्रबंधक और दक्ष रणनीतिकार जयंत मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं। इन्होने रांची के जेवियर स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज से एचआर में एमबीए (पीजीडीबीएम) की पढ़ाई की। 2008 में इन्होने वित्तीय संस्थानों में योग्य कर्मचारियों के मैनेजमेंट पर पीएचडी भी की है ।

उच्च शिक्षित जयंत कुमार 1994 ने एन टी पी सी से अपने कैरियर की शुरुआत की, इन्होने 2005 तक एच आर मैनेजर के रूप में वहाँ काम किया। इसके बाद वे अगले दो वर्ष एनडीपीएल और एक वर्ष रिलायंस कम्युनिकेशन में भी रहे। 2007 में उन्होंने टाटा टेलीसर्विसेस ज्वॉइन की। यहाँ से वाइस प्रेसिडेंट एच आर बनाये गये, वर्ष 2012 ये मैरिको लिमिटेड से जुड़ गये जहां इन्हे एग्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट की जिम्मेदारी दी गई, 2013 में टाटा पावर से प्रस्ताव मिला और टाटा पावर में अप्रैल 2013 से सितंबर 2016 तक एच आर में इनके बेहतर कार्य को देखते हुये कंपनी का इन्हे मुख्य मानव संसाधन अधिकारी (सी एच आर ओ) बना दिया गया। इन्हें योग्य कर्मचारियों की पहचान और नियुक्ति के मामलों का जादूगर कहा जाता है। विभिन्न मौकों पर वह अपनी काबिलियत साबित भी कर चुके हैं। अपनी राष्ट्रिय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है ,उपरोक्त पाँच मानदंड पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **कुशल प्रबंधक कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

प्रशंसापात्र

भारतीय पुलिस सेवा के 1992 बैच के अधिकारी अजय आनंद को उत्तरप्रदेश के महत्वपूर्ण आगरा जोन का अपर पुलिस महानिदेशक (एडीजी) नियुक्त किया गया है। आगरा रेंज के तहत आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद और मैनपुरी जिले आते हैं। एक जनवरी 2017 को उन्हें यह जिम्मेदारी दी गयी। उत्तरप्रदेश कैडर के आईपीएस अधिकारीअजय आनंद का मूल निवास बिहार की राजधानी पटना में है। उनके पिता श्याम नंदन सिंह सरकारी नौकरी में थे। अजय का जन्म 13 अप्रैल 1965 को हुआ और उन्हें 12 अक्टूबर 1992 को पुलिस सेवा में शामिल किया गया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एमए की पढ़ाई की है।

अपराध नियंत्रण के माहिर जानकार

अजय आनंद

वे मई 2016 में इलाहबाद पुलिस मुख्यालय में पुलिस महानिरीक्षक की जिम्मेदारी दिये जाने से पहले केंद्र सरकार की प्रतिनियुक्ति पर थे। राजधानी दिल्ली में तैनाती के दौरान उन्होंने लोकसभा के संयुक्त सुरक्षा निदेशक के पद पर काम किया। उनके पास पांच साल तक भारतीय संसद भवन की सुरक्षा जिम्मा संभालने का अनुभव है। अजय आनंद ने भारत सरकार में ज्वांइट सेक्रेटरी रहते हुए संसद भवन की सुरक्षा का जिम्मा बखूबी संभाला था। हाल ही में जब यूपी विधानसभा में विष्फोटक मिलने से प्रशासनिक महकमे में हड़कंप मचा था तो उन्हें विशेष तौर पर सुरक्षा के उपाय सुझाने के लिये लखनऊ बुलाया गया था। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से पहले वे लखनऊ में रेलवे के पुलिस अधीक्षक की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं। इस पद पर रहते हुए उनका कार्यकाल एक बार बढ़ाया भी गया था। उन्हें मई 2008 में डीआईजी रैंक, मई 2012 में आईजी रैंक और जनवरी 2017 में एडीजी रैंक का प्रमोशन प्राप्त हुआ है।

अपनी वर्तमान नियुक्ति से पहले अजय आनंद मेरठ जोन के पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। वे मेरठ में 3 सितंबर 2016 को आईजी पद पर तैनात हुए थे। उनके आठ महीने के कार्यकाल में बड़ी घटना सहारनपुर बवाल बताया गया जिसमें उनकी भूमिका काफी प्रशंसनीय रही। प्रदेश में अपराध पर नियंत्रण और कानून व्यवस्था बनाए रखने में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें पुलिस महानिदेशक प्रशंसा चिह्न से सम्मानित किए जाने के लिए चुना गया है।अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **प्रशंसापात्र कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

योग्य

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

अब बात एक ऐसी शख्सियत की जिसने अपनी दूरदर्शिता व योग्यता से राजधानी दिल्ली को संवारने में अहम भूमिका निभायी। जितेंद्र नारायण लंबे अरसे तक दिल्ली और केंद्र सरकार में विभिन्न पदों पर तैनात रहे। अरुणाचल सरकार की तरफ से भी उन्हें दिल्ली में ही पदस्थापित किया गया है। बिहार में बेगूसराय के प्रतिष्ठित राय बहादुर परिवार में 19 अक्टूबर 1966 को जन्मे जितेंद्र नारायण की स्कूली शिक्षा दार्जिलिंग के सेंट पॉल स्कूल में हुई। दिल्ली के प्रतिष्ठित सेंट स्टीफन्स कॉलेज के छात्र रहे नारायण ने इतिहास में बीए व एमए किया।

उसूलों के पक्के और संबंधों के माहिर अधिकारी

जितेंद्र नारायण

वे 1 जुलाई 1990 को भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए और उन्हें केंद्र शासित प्रदेश कैडर प्राप्त हुआ। वे दिल्ली के शुरुआती प्रशासनिक अधिकारियों में से थे जिन्होंने राजधानी को नौ जिलों में बांटने में अहम भूमिका निभायी। उन्हें 2015 में दिल्ली में वित्त आयुक्त के पद पर नियुक्त किया गया था। उन्हें जुलाई 2015 में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सचिवों में से एक रहते हुए उच्च प्रशानिक स्तर (एचएजी) पर पदोन्नत किया गया। इससे पहले वे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीटी) में श्रम सचिव और आयुक्त की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। उन्हें मार्च 2011 में सार्वजनिक उपक्रम विभाग में संयुक्त सचिव भी बनाया गया। कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ संबंध बनाने की कला में उन्हें महारत हासिल है।

27 वर्ष के सेवाकाल के दौरान जितेंद्र नारायण ने विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का कुशलता पूर्वक निर्वहन किया है। वे बेहतरीन योजनाकार और नीति-निर्माता के रूप में प्रशासनिक हलकों में अपनी विशेष पहचान स्थापित कर चुके हैं। उन्हें प्रतिष्ठित कॉमनवेल्थ एसोशिएसन फॉर पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट रिकॉगनिशन भी प्राप्त हो चुका है। उनके ऑफिस मैनेजमेंट 'कर्मोदय' को भारत सरकार के प्रशासनिक विभाग ने सर्वश्रेष्ठ प्रणालियों में से माना।

अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर उन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढ़ाया है। उपरोक्त पांच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **योग्य कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

कलात्मक

भारतीय टेलीविजन पर रश्मि शर्मा टेलेफिल्म्स का नाम किसी परिचय क मोहताज नहीं है। इस प्रोडक्शन हाउस के दर्जनों टीवी सीरियल देश के तकरीबन सभी बड़े-छोटे चैनल पर लोकप्रियता की नयी ऊंचाइयां छू रहे हैं। इस सफलता के पीछे अहम रोल है मशहूर निर्माता निर्देशक पवन कुमार मारुत का। इसके अलावा वे कई फिल्मों का निर्देशन कर अपनी प्रतिभा का लोहा भी मनवा चुके हैं। बिहार के छोटे से शहर चितरंजन में जन्मे व पले-बढ़े पवन कुमार ने टीवी सीरियलों की दुनिया में कदम रखा सन् 2003 में ज़ी टीवी पर पिया का घर से।

मनोरंजन जगत में ताजगी का झोंका

पवन कुमार मारुत

सीरियल इतना हिट हुआ कि चैनल ने इसे करीब ढाई साल तक जारी रखा। फिर तो पवन कुमार मारुत ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। 2008 में स्टार प्लस पर 'राजा की आयेगी बारात' से उन्होंने रश्मि शर्मा के साथ प्रोडक्शन शुरु किया। भारतीय चैनलों पर उनके एक के बाद एक सीरियलों ने दर्शकों के दिलों पर बरसों तक राज किया। आज भी उनके दो सीरियल ससुराल सिमर का और साथ निभाना साथिया 1800 से भी अधिक एपिसोड के साथ टीवी जगत के सबसे ज्यादा चलने वाले सीरियलों में शुमार हैं। इसके अलावा शक्ति- अस्तित्व के अहसास की और संतोषी माता आदि भी लोकप्रियता की बुलंदियों पर रहे हैं।

2016 में पवन कुमार मारुत की फिल्म पिंक ने रुपहले पर्दे पर ऐसा धमाल मचाया कि पूरी इंडस्ट्री दंग रह गयी। सुपर स्टार अमिताभ बच्चन और कुछ नवोदित चेहरों को साथ लेकर बनी इस फिल्म ने महज 10 दिनों में 50 करोड़ का कारोबार कर बाजार विशेषज्ञों को भी दांतों तले उंगलियां दबाने पर मजबूर कर दिया। फिल्म ने देश-विदेश में कई अवॉर्ड जीते। यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र में इसे स्पेशल स्क्रीनिंग के लिये भी बुलाया गया।

अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है। उपरोक्त पाँच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **कलात्मक कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

कामयाब

FAME INDIA

50 प्रभावशाली बिहारी

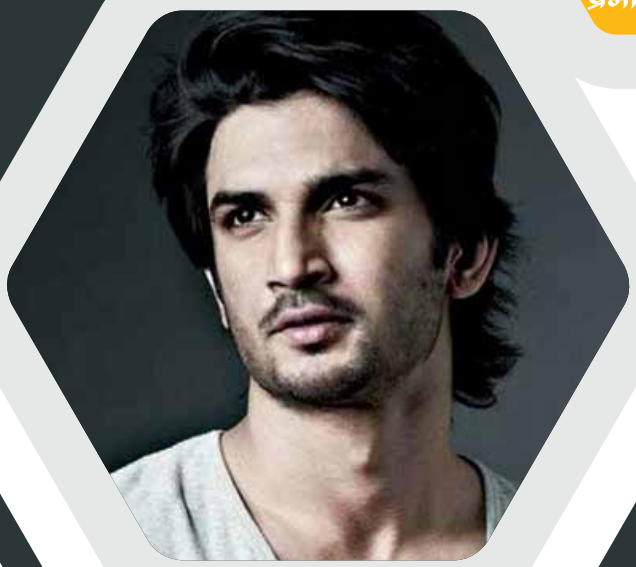

सुशांत सिंह राजपूत आज बॉलीवुड का एक जाना-माना चेहरा है। वे ऐसे गिनती के सितारों में से हैं जिन्होंने बिना किसी पहुंच के पहले छोटे पर्दे यानी टेलीविजन की दुनिया में अपनी धाक जमायी और फिर बड़े पर्दे पर छा गये। सुशांत सिंह का जन्म पटना के एक संपन्न परिवार में 21 जनवरी 1986 को हुआ था। उनका पैत्रिक घर पूर्णिया के माल्दिहा गांव में है। पढ़ाई-लिखाई में बेहद प्रतिभाशाली सुशांत ने शुरुआती शिक्षा पटना के सेंट कैरेन्स और परिवार के दिल्ली शिफ्ट होने के बाद कुलांची हंसराज स्कूल में हासिल की। वे फिजिक्स के नैशनल ओलिंपियाड विजेता भी रहे।

सुपर स्टार बनने के रास्ते पर

सुशांत सिंह राजपूत

इंटरमीडियट के बाद उन्होंने दाखिला लिया दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में। इसके साथ ही उन्होंने शायमक डावर डांस स्कूल और बेरी जॉन की ऐक्टिंग क्लास में दाखिला ले लिया। उन्होंने पाया कि उनका पहला प्यार ऐक्टिंग ही था। डांस और ऐक्टिंग को पूरी तरह अपना कॅरीयर बनाने के लिये उन्होंने तीसरे साल में ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई छोड़ दी। मुंबई पहुंच कर उन्होंने नादिरा बब्बर का एकजुट थियेटर ग्रुप ज्वाइन किया। इस दौरान उन्हें नेस्ले मंच के टीवी ऐड में काम मिला तो देश भर में जाना-माना चेहरा बन गये। जल्दी ही बालाजी टेलिफिल्म्स की कास्टिंग टीम ने उन्हें ऑडिशन के लिये बुलाया और सन् 2008 में आये सीरियल 'किस देश में है मेरा दिल' से उनके टीवी का कॅरीयर शुरु हुआ। फिर सन् 2009 में पवित्र रिश्ता से उन्होंने टीवी पर लोकप्रियता की नयी इबारत लिखी। उन्हें एक के बाद एक तीन बड़े टीवी अवॉर्ड मिले। इसके बाद वर्ष 2010 में उन्होंने जरा नच के दिखा से अपनी डांसिंग की प्रतिभा का लोहा मनवाया। अगले साल यानि अक्टूबर 2011 में वे पवित्र रिश्ता छोड़ कर एक ऐक्टिंग कोर्स करने विदेश चले गये।

वापस आने पर सन् 2013 में उनका चुनाव अभिषेक कपूर की बहुचर्चित फिल्म काई पो चे के लिये हो गया जिसमें उन्हें काफी सराहना मिली। उन्होंने सन् 2014 में आयी यशराज फिल्म्स की शुद्ध देसी रोमांस से। इसी साल आमिर खान की फिल्म पीके में भी उन्होंने जोरदार अभिनय किया। इसके अगले साल यानि 2015 में उन्हें दिबाकर बनर्जी की फिल्म ब्योमकेश बख्शी में एक देसी अंदाज वाले जासूस का लीड रोल मिला। अगले साल यानी 2016 में एमएस धोनी की बायोपिक में उन्हे लीड रोल मिला। सुशांत को इस फिल्म के लिये कई पुरस्कार भी मिले।

आने वाले दिनों में सुशांत एक सुपर स्टार साबित होंगे इसके पूरे आसार बनते नजर आ रहे हैं। अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश-दुनिया में बढ़ाया है। एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें प्रमुख स्थान पर पाया है।

FAME INDIA fi 50 प्रभावशाली बिहारी

विरासत

अक्सर देखने में आता है कि पिता अगर प्रतिभा और शोहरत से लबरेज हों तो संतान को उस स्तर तक पंहुचने में काफी वक्त लग जाता है, लेकिन मशहूर रंगकर्मी पद्मश्री रामगोपाल बजाज के पुत्र असीम प्रकाश बजाज ने इस धारणा को गलत साबित करते हुए अपना अलग ही मुकाम कायम किया है। वे अपने पिता से अलग एक मशहूर रंगकर्मी व निर्देशक के तौर पर अपनी पहचान स्थापित करने में कामयाब रहे हैं।

पिता की विरासत को नये आसमान तक पहुंचाते

असीम बजाज

असीम प्रकाश बजाज का जन्म 1 जनवरी 1977 को बिहार के सुपौल स्थित निर्मली गांव में हुआ था। बचपन गांव में गुजरा और खेतों में हवाई जहाज की छाया के पीछे दौड़ते खेलते असीम ने नौ साल की उम्र में ही तय कर लिया था कि उसे फिल्मों में जाना है। दिल्ली विश्वविद्यालय में दाखिला मिला तो थियेटर से भी जुड़ाव हुआ। निर्माण कला मंच के बैनर तले फुटपाथ के बच्चों को लेकर कई मशहूर अंग्रेजी और हिन्दी नाटकों का मंचन किया। जस्मा ओढ़न, बकरी, कॉकेशियन चाक सर्किल, बिदेसिया आदि का प्रदर्शन किया। हालांकि पिता नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) के डायरेक्टर थे लेकिन वहां दाखिला नहीं लिया। एनएसडी में तीन महीने का एक वर्कशॉप करने का मौका मिला। दिल्ली के थियेटर सर्किल में 'ऐक्ट वन' ग्रुप के साथ सक्रियता से जुड़े। पर्दे के पीछे की कई विधाओं जैसे लाइटिंग, म्युजिक कंपोजिशन, निर्देशन आदि में महारत हासिल किया। फिर मुंबई का रुख किया और वहां एक नयी ही विधा कैमरा यानि सिनेमैटोग्राफी में अपनी प्रतिभा के झंडे गाड़े।

असीम बजाज को कैमरे की गहरी समझ है और उन्होंने कई फिल्मों व ऐड कैंपेन में कमाल का फोटॉग्राफी निर्देशन किया है। उन्हें फोटॉग्राफी के लिये सिंगापुर में एशिया इमेज अवॉर्ड 2001 मिल चुका है। उन्हें सिनेमैटोग्राफी के लिये कई अवॉर्ड मिल चुके हैं जिनमें फिल्मफेयर, इंटरनैशनल इंडियन फिल्म अकादमी, सांसुई व्युअर्स च्वॉइस अवॉर्ड, आदि मिल चुके हैं। वे स्वारोवस्की ट्रॉफी, जी सिने अवॉर्ड, हमबोल्ड्ट इंटरनैशनल फिल्म फेस्टिवल आदि में बेस्ट सिनेमैटोग्राफर का अवॉर्ड भी हासिल कर चुके हैं। वे कई अवॉर्ड समारोहों के ज्युरी सदस्य भी बन चुके हैं।

अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है। उपरोक्त पाँच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **विरासत कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

कामयाब

FAME INDIA 50 प्रभावशाली बिहारी

बिहार की मिट्टी से उपजे एक ऐसे लाल जिन्होंने अपनी प्रतिभा का लोहा भारत ही नहीं, पूरी दुनिया से मनवाया। ये शख्स हैं डॉक्टर अजया नंद झा जो गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में न्यूरोलॉजी विभाग के हेड की जिम्मेदारी निभा रहे हैं। वे एमआरआई तकनीक व दिमाग और रीढ़ की सर्जरी के विशेषज्ञ हैं। वह मेदांता में न्यूरोवैस्कुलर इंटरवेंशन, एन्डोस्कोपिक स्पाइन सर्जरी, एन्डोस्कोपिक स्कल बेस सर्जरी, फंक्शनल न्यूरोसर्जरी और रेडियो सर्जरी के लिए विशेषज्ञों की टीम का नेतृत्व करते हैं।

देश के सर्वश्रेष्ठ न्युरोसर्जनों में शुमार

डॉ. अजया नंद झा

इस क्षेत्र में 27 वर्ष का अनुभव रखने वाले डॉ. झा रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन, एडिनबर्ग, यूके, सोसाइटी ऑफ़ ब्रिटिश न्यूरोलॉजिकल सर्जन, अमेरिका के न्यूरोलॉजिकल सर्जन कांग्रेस और अंतर्राष्ट्रीय स्टीरियोटेक्टिक रेडियोसर्जरी सोसाइटी आदि संस्थानों से जुड़े हैं। उनकी गिनती देश के सर्वश्रेष्ठ न्यूरोसर्जन में की जाती है।

उन्होंने पुणे के एएफएमसी से 1977 में एमबीबीएस की पढ़ाई की। इसके बाद दिल्ली के प्रतिष्ठित लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज से सर्जरी में एमएस किया। वे 1983 में ब्रिटेन के स्कॉटलेंड स्थित रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जनस ऑफ इडनबर्ग से एफआरसीएस की पढ़ाई भी कर चुके हैं।

डॉक्टर अजया नन्द झा को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 2008 में उन्हें मैक्स हेल्थकेयर की ओर से 'स्पेशल रिकॉग्निशन अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। इससे पहले उन्हें 1997 का आईएमए एक्सीलेंस अवॉर्ड और 1982 में श्रीमति लक्ष्मी राम चंद्रन मेमोरियल ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। कई राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय हेल्थ जनरल्स में न्यूरोसर्जरी विषय पर उनके कई शोधपत्र और लेख भी प्रकाशित किये गये हैं।

डॉक्टर अजया नन्द झा मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं। वे विश्व में तेजी से बढ़ रहे मानसिक रोगों को मानव स्वास्थ्य के लिए बड़ा खतरा मानते हैं। इसके लिए वह आधुनिक जीवन शैली को जिम्मेदार मानते हैं। कई मौकों पर वे आधुनिक तकनीक के माध्यम से असाध्य मानसिक विकारों से ग्रस्त मरीजों को बड़ी राहत भी दे चुके हैं।

अपनी राष्ट्रीय छवि, कार्यक्षेत्र में सफलता, सामाजिक सरोकार, राज्य से जुड़ाव और देश में बड़ा प्रभाव बना कर इन्होंने बिहार का मान देश दुनिया में बढाया है। उपरोक्त पाँच मानदंडों पर **एशिया पोस्ट व फेम इंडिया मैगजीन** द्वारा किये गये सर्वे 50 प्रभावशाली व्यक्तियों में इन्हें **कामयाब कैटगरी** में प्रमुख स्थान पर पाया है।

पांच राज्य, पांच संस्करण : फेम इंडिया के बढ़ते कदम

सोच बदलें, समाज बदलेगा

सदस्यता फार्म

मैं फेम इंडिया की सदस्यता ले रहा / रही हूं

श्रीमती/ कुमारी/ श्री .....

पता: .....

..... राज्य .....

फोन (निवास) ..... मोबाइल .....

ई-मेल .....

कृपया ..... के नाम ..... का डी डी

या चेक नं. .....

बैंक का नाम .....

चैक फेम इंडिया के नाम पर देय होगा

दिल्ली के बाहर से भेजे गए चेक में कृपया 30 रूपया अधिक भेजें

कृपया इस फार्म को भरकर डी डी या चेक के साथ हमें इस पते पर भेजें

फेम इंडिया

फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा.लि. 762, F- 8, सेक्टर 50, नोएडा 201304 (उ.प्र .)

फोन नं. 09711535422

ई मेल-ई मेल- info.fameindia.co

अवधि	अंको की संख्या	कवर मूल्य	सब्सक्रिप्शन मूल्य	बचत
1 वर्ष	12	600	500	100
2 वर्ष	24	1200	1000	200
3 वर्ष	36	1800	1500	300

शिक्षा में कॉर्पोरेट निवेश बेहतर गुणवत्ता लाएगा

सदगुरु जग्गी वासुदेव

शिक्षा-व्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा अभी तक सरकार के हाथों में है। सरकार को नीतियां बनाने का काम करना चाहिए, उन सब नीतियों को खुद अमली जामा पहनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यह तरीका कहीं भी सफल नहीं हुआ है। जहां तक बेसिक शिक्षा की बात है तो जब उस क्षेत्र में कोई नहीं जाना चाहता था तो सरकार को वह जिम्मेदारी उठानी पड़ी। अब लोग शिक्षा के क्षेत्र में जाने को इच्छुक हैं। दुर्भाग्य से भारत में गरीबी का महिमामंडन किया जाता है, इसलिए व्यवसाय, एंटरप्राइजेज को हम बुरा मानते हैं। बहुत जरूरी है कि कारोबारी लोग शिक्षा के क्षेत्र में निवेश करें। व्यवसाय गलत केवल उन्हीं स्थितियों में है, जब आप उसके जरिये किसी का शोषण कर रहे हों।

दुनिया में जहां कहीं भी जिन भी देशों ने बड़ी सफलता पाई है, उनके यहां व्यवसाय को शोषण का जरिया नहीं, बल्कि हर तरह के शोषण को हटाने का तरीका समझा जाता है, क्योंकि व्यवसाय प्रतियोगिता पैदा करता है। प्रतियोगिता से तय होता है कि जो भी सबसे अच्छा काम करेगा, लोग वहीं जाएंगे।

सवाल यह हो जाता है कि किसकी चीज सबसे अच्छी है। जब कोई प्रतियोगिता ही नहीं थी, तो छोटे-छोटे कारोबारी एक खास तरीके से लोगों का शोषण किया करते थे, तब बात अलग थी। लेकिन अब समय बदल चुका है। अब बड़े बिजनेस घरानों को शिक्षा के क्षेत्र में आना चाहिए, क्योंकि अब ज्यादातर शहरी परिवार तीन, चार या पांच बच्चों के बजाय एक या दो बच्चों तक ही सीमित हो गए हैं।

इनमें से बहुत सारे लोग बच्चों पर पैसा खर्च करना चाहते हैं। जो लोग महंगी चीजों को वहन नहीं कर सकते, उनके लिए अलग तरह की शिक्षा होनी चाहिए। हम उन्हें भी छोड़ नहीं सकते। लेकिन जो लोग वहन कर सकते हैं, वे किन चीजों में अपना पैसा खर्च कर रहे हैं? ब्रैंडेड कपड़ों, विदेश यात्राओं, लग्जरी कारों में। होना तो यह चाहिए कि वे अपना पैसा बच्चों की शिक्षा पर खर्च करें, क्योंकि बच्चे ही हमारे देश का भविष्य हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में लोगों को चुनने का अवसर मिलना चाहिए

अठारह से बीस अरब डॉलर की रकम भारत से बाहर चली जाती है क्योंकि अच्छी शिक्षा की तलाश में बहुत सारे माता-पिता अपने बच्चों को विदेश भेज देते हैं। एक समय था, जब लोग मास्टर्स डिग्री के लिए विदेश जाते थे। उसके कुछ समय बाद लोग अंडरग्रैजुएट कोर्स के लिए ही विदेश जाने लगे। आजकल तो मैं सुनता हूं कि माता-पिता अपने बच्चे को दसवीं के बाद ही ग्यारहवीं या बारहवीं करने के लिए विदेश भेज रहे हैं।

वे उन पर मोटी रकम खर्च करते हैं और उसके बावजूद चैन से नहीं रह पाते। बच्चे के विदेश जाने के बाद उन्हें डर सताता रहता है कि कहीं बच्चा नशीले पदार्थों का सेवन तो करने नहीं लग जाएगा? कहीं हमारा बच्चा खो तो नहीं जाएगा? क्या फिर हम अपने बच्चे को दोबारा देख पाएंगे? इन सभी डरों के बावजूद वे अपने बच्चों को विदेश भेजना चाहते हैं, क्योंकि हम देश में उस स्तर की शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध नहीं करा पाएं हैं।

अगर हम अच्छी गुणवत्ता की चीजें चाहते हैं तो निवेश तो करना ही होगा। आप सरकार से तो इंवेस्टमेंट करने की अपेक्षा नहीं कर सकते। लोगों को ही निवेश करना होगा, कारोबारियों को निवेश करना होगा। निवेश

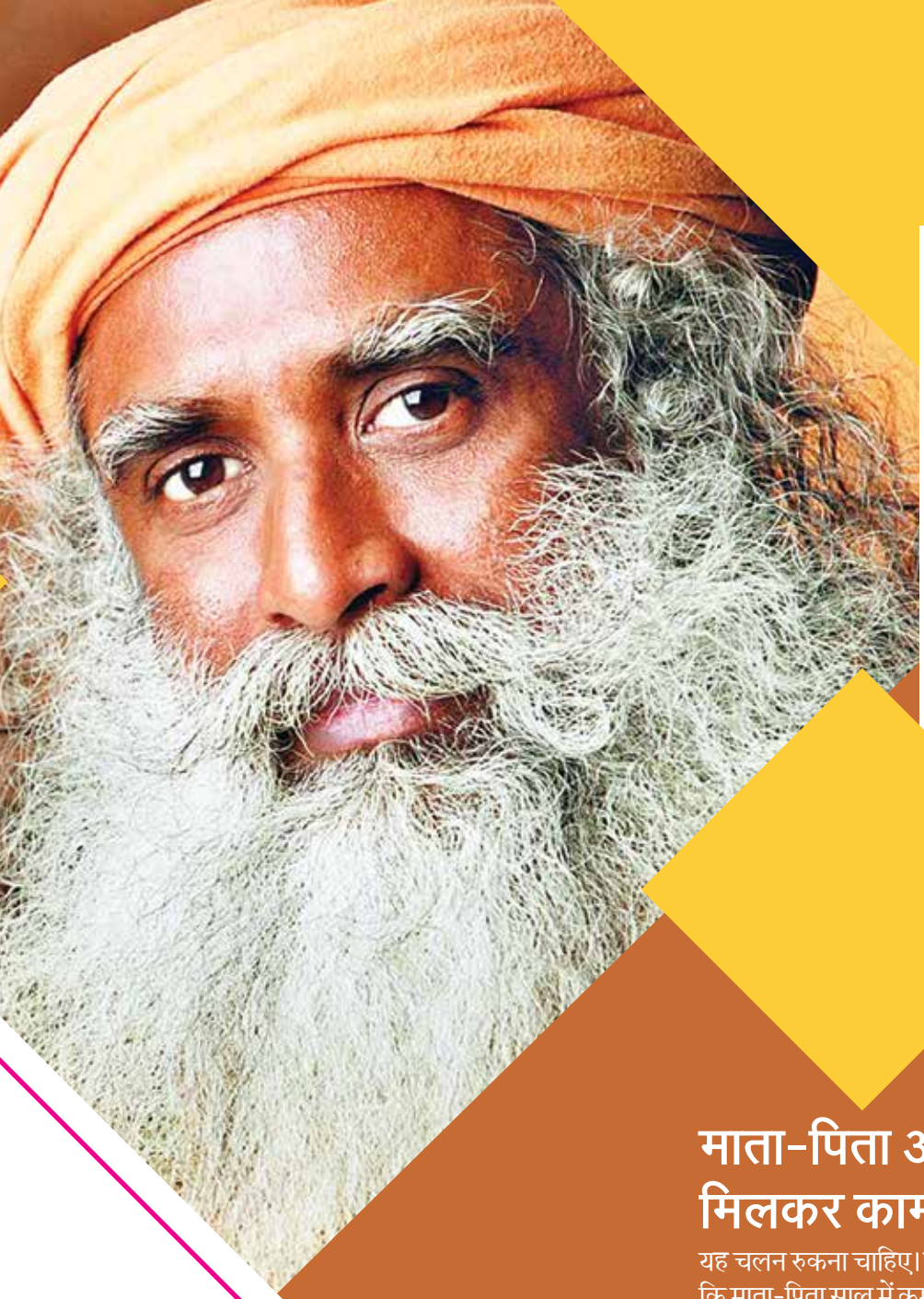

स्कूल और माता-पिता के बीच एक समझौता हो कि स्कूल किस तरह की शिक्षा देगा। हरदम सरकार ही लोगों को यह बताने की कोशिश कर रही है कि उन्हें कैसी शिक्षा मिलनी चाहिए। यह काम माता-पिता और टीचर्स को मिलकर करना चाहिए। आजकल बहुत सारे माता-पिता सोचते हैं कि एक बार अगर उन्होंने बच्चे को स्कूल में डाल दिया तो उनका काम खत्म हो गया।

माता-पिता और शिक्षकों को मिलकर काम करना होगा

यह चलन रुकना चाहिए। हर स्कूल को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि माता-पिता साल में कम-से-कम दो से तीन बार स्कूल आएं और देखें कि किस तरह की शिक्षा वहां दी जा रही है, शिक्षा को बच्चों तक कैसे पहुंचाया जा रहा है और उनके बच्चों का विकास कैसे हो रहा है। हो सके, तो इस मामले में नियम भी बनाए जा सकते हैं।अगर माता-पिता अपने बच्चे की शिक्षा के लिए इतना नहीं कर सकते तो भला टीचर जिम्मेदारी क्यों ले।

माता-पिता की जब अपने खुद के बच्चे की शिक्षा के प्रति कोई प्रतिबद्धता नहीं है, तो टीचर से उम्मीद कैसे की जा सकती है। यह कानून होना चाहिए कि सभी माता-पिता साल में कम-से-कम तीन बार बच्चे के स्कूल जाएं और वहां कम-से-कम एक पूरा दिन बिताएं। बच्चे की शिक्षा में उसके माता-पिता की भागीदारी की संस्कृति विकसित होनी ही चाहिए। बिना भागीदारी के कुछ भी खूबसूरत नहीं होने वाला है। भागीदारी से ही होगा।

तभी संभव है, जब उससे रिटर्न मिले। रिटर्न नहीं होगा तो कोई निवेश क्यों करेगा? तो क्या वे शोषण करेंगे? मैं कहता हूं, करने दीजिए शोषण। अगर आप अपने स्कूल के जरिए शोषण कर रहे हैं तो कोई और स्कूल खुल जाएगा, आपका स्कूल बंद हो जाएगा। शोषण को कानून से नहीं रोका जा सकता, आप लाठी के जरिये इसे नहीं रोक सकते। लाठी से तो सबसे ज्यादा शोषण आएगा। शोषण को सिर्फ प्रतियोगिता के जरिये ही खत्म किया जा सकता है। शोषण तभी मिट सकता है जब लोगों को फैसला करने दिया जाए।

'संघे शक्ति कलियुगे'

स्वतंत्रता आन्दोलन को मजबूत करने की भावना एवं राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रचार के लिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना डॉक्टर केशव राव बलिराम हेडगेवार ने 27 सितंबर, 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर में की थी। विश्व स्तर फैले हुए इस संघ की सबसे बड़ी शक्ति इसके समर्पित स्वयंसेवक है जो किसी भी आपात परिस्थिति में जन कल्याण की भावना से कार्य करने को तैयार रहते हैं। सभी जाति, धर्म के लोगो के जन कल्याण में जुड़े इस संघ को बीबीसी ने भी विश्व का सबसे बड़ा संगठन माना है। संघ का अर्थ समूह और स्वयंसेवक का अर्थ निस्वार्थ सेवा करने वाला। स्वयंसेवकों द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग के उत्थान के लिए, उनमें आत्मविश्वास व राष्ट्रीय भाव निर्माण करने हेतु डेढ़ लाख से अधिक सेवा कार्य चल रहे हैं।

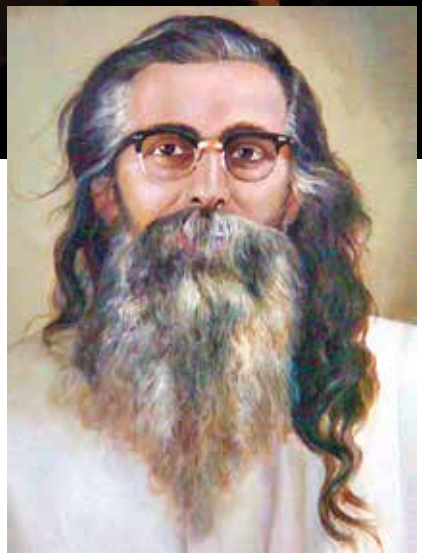

विरोधियों के प्रचार के विपरीत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य सदैव राष्ट्र हित रहा है, कम लोगों को पता है कि इस महासंगठन ने राष्ट्र कल्याण के लिये कितने महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। विपरीत परिस्थितियों में इसके सबसे बड़े आलोचक रहे पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भी संघ से मदद ली थी। आज़ादी के बाद संघ के किये कुछ कार्यो पर एक नजर डालें जिसने इसे राष्ट्रवाद व विश्व कल्याण के सबसे अग्रणी संस्थाओं की श्रेणी में खड़ा किया है

* आजादी के बाद अक्टूबर 1947 में पाकिस्तानी सेना ने कश्मीर सीमा के जरिये घुसपैठ शुरु कर दी। आरएसएस के स्वयंसेवकों ने पाकिस्तानी सेना की गतिविधियों पर लगातार नजर रखी। और जब पाकिस्तानी सेना की टुकड़ियों ने कश्मीर की सीमा लांघने की कोशिश की, तो वीर भारतीय सैनिकों के साथ मिल कर मातृभूमि की रक्षा करते हुए लड़ाई में शहीद हुए थे।

*विभाजन के दौरान दंगा भड़कने पर बिना जाति-धर्म का भेद किये संघ ने पाकिस्तान से जान बचाकर आये शरणार्थियों के लिए 3000 से ज्यादा राहत शिविर लगाये थे।

* कश्मीर के विलय में भी आरएसएस की सबसे बड़ी भूमिका रही। महाराजा हरि सिंह विलय का फैसला नहीं कर पा रहे थे और उधर कबाइलियों के वेश में पाकिस्तानी सेना कश्मीर की सीमा में घुसती जा रही थी तब सरदार पटेल ने गुरु गोलवलकर से मदद मांगी। गुरुजी ने श्रीनगर पहुंच

कर महाराजा को कश्मीर के भारत में विलय को लिये प्रेरित किया।

* जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के लिये संघ के स्वयंसेवकों ने वृहद् जनजागरण अभियान चलाया। बड़े प्रचारकों ने कई जमींदारो को इसके लिए राजी करवाया। राजस्थान में, जहां बड़ी संख्या में जमींदार थे, वहां खुद सीपीएम जैसी पार्टी ने भी संघ के स्वयंसेवक भैरों सिंह शेखावत को राजस्थान का सबसे प्रगतिशील शक्तियों का नेता माना। शेखावत बाद में भारत के उपराष्ट्रपति भी बने।

आरएसएस द्वारा संगठित 1955 में बने भारतीय मजदूर संघ को विश्व का सबसे बड़ा, शांतिपूर्ण और रचनात्मक मजदूर संगठन माना जाता है जो विध्वंस के बजाए निर्माण की धारणा पर चलता है। कारखानों में विश्वकर्मा जयंती का चलन भारतीय मजदूर संघ ने ही शुरू किया था।

राष्ट्रप्रेम की बड़ी मिसाल 1962 के युद्ध में संघ के स्वयंसेवकों ने दिखायी। जान की बाजी लगाकर देश के जवानों की मदद में पूरी ताकत लगा दी - सैनिक आवाजाही मार्गों की चौकसी, प्रशासन की मदद, रसद और आपूर्ति में मदद और यहां तक कि शहीदों के परिवारों की भी चिंता भी। संघ के कार्यों की इतनी प्रशंसा हुई कि तत्कालीन सरकार ने 1963 में गणतंत्र दिवस की परेड में आरएसएस को शामिल होने का निमंत्रण दिया। ये विश्व के सामने पहली मिसाल थी कि केवल लाठी के बल पर भी सफलतापूर्वक बम और चीनी सशस्त्र बलों से लड़ा सकता है,

दादरा, नगर हवेली के भारत विलय में भी संघ की निर्णायक भूमिका थी। संघ के स्वयंसेवकों ने 1954 में पुर्तगाल का झंडा उतारकर भारत का तिरंगा फहराया, पूरा दादरा, नगर हवेली पुर्तगालियों के कब्जे से मुक्त करा कर भारत सरकार को सौंप दिया।

संघ के स्वयंसेवक 1955 से गोवा मुक्ति संग्राम में प्रभावी रूप से शामिल हो चुके थे। जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में संघ के कार्यकर्ताओं ने गोवा पहुंच कर आंदोलन शुरू किया। अंततः भारत को सैनिक हस्तक्षेप करना पड़ा और परिणामस्वरूप 1961 में गोवा आज़ाद हुआ।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, शिक्षा भारती, एकल विद्यालय, स्वदेशी जागरण मंच, विद्या भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच जैसे कई विकासपरक संगठनों की स्थापना आर एस एस के द्वारा की गयी

1965 में पाकिस्तान से युद्ध के समय लाल बहादुर शास्त्री ने संघ को कानून-व्यवस्था की स्थिति संभालने में मदद देने और दिल्ली के यातायात का नियंत्रण अपने हाथ में लेने का आग्रह किया, ताकि इन कार्यों से मुक्त किये गये पुलिसकर्मियों को सेना की मदद में लगाया जा सके। घायल जवानों के लिए रक्तदान करने से लेकर युद्ध के दौरान कश्मीर की हवाई पट्टियों से बर्फ हटाने का काम भी भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिला कर स्वयंसेवकों ने किया था।

1975 से 1977 के बीच आपातकाल के खिलाफ संघर्ष और जनता पार्टी के गठन में आरएसएस की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है , आपातकाल के खिलाफ सड़कों पर पोस्टर चिपकाना, जनता को सूचनाएं देना और जेलों में बंद विभिन्न राजनीतिक कार्यकर्ताओं, नेताओं के बीच संवाद सूत्र का काम संघ कार्यकर्ताओं ने संभाला। जब लगभग सारे ही नेता जेलों में बंद थे, तब सारे दलों का विलय करा कर जनता पार्टी का गठन करवाने की कोशिशें संघ की ही मदद से चल सकी थीं।

विद्या भारती आज 20 हजार से ज्यादा स्कूल चलाता है, लगभग दो दर्जन शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज, डेढ़ दर्जन कॉलेज, 10 से ज्यादा रोजगार एवं प्रशिक्षण संस्थाएं चलाता है सेवा भारती देश भर के दूरदराज़ और दुर्गम इलाक़ों में सेवा के एक लाख से ज्यादा काम कर रही है। उदाहरण के तौर पर सेवा भारती ने जम्मू-कश्मीर से आतंकवाद से अनाथ हुए 57 बच्चों को गोद लिया है जिनमें 38 मुस्लिम और 19 हिंदू बच्चे हैं।

1971 में ओडिशा में आए भयंकर चक्रवात से लेकर भोपाल की गैस त्रासदी तक, 1984 में हुए सिख विरोधी दंगों से लेकर गुजरात के भूकंप, सुनामी की प्रलय, उत्तराखंड की बाढ़ और कारगिल युद्ध के घायलों की सेवा तक- संघ ने राहत और बचाव का काम हमेशा सबसे आगे होकर किया है। भारत में ही नहीं, नेपाल, श्रीलंका और सुमात्रा तक में।

माना जाता है की अपने प्रति दुष्प्रचार से अविचलित राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ निरंतर राष्ट्र प्रेम की भावना से ओतप्रोत जन हित के कार्यो को करने को सदैव तत्पर है , धार्मिक कट्टरता का कोई

आरोप दुनिया के अन्दर अब तक संघ के इतिहास में नहीं देखा जाता . सभी राष्ट्रवादियो के लिए सामान सम्मान रखने की भावना और देश प्रेम को प्रमुख मानाने वाले इस संगठन के स्वयंसेवक किसी भी विपरीत परिस्तिथि में एक जुटता से जन हित मेके कार्य करने को सदैव तत्पर है -

लेखक- धीरज कुमार भरद्वाज - शोध श्रोत - स्वांत रंजन , सु रमण , सुरेश देव पुजारी , मधुसुदन वैध , दतात्रेय होस्बोले , डॉ दिनेश , मिथिलेश नारायण

मधुबनी में स्थापित है एकादश रुद्र महादेव का दुर्लभ मंदिर

देश के हिन्दू तीर्थ स्थलों में बिहार के मधुबनी जिला मुख्यालय के निकट मंगरौनी गांव स्थित एकादश रुद्र महादेव का अलग ही महत्व है. ये महत्व इसलिये भी बढ़ जाता है कि यह अपने आप में दुनिया में अनोखी जगह है, जहां एक साथ शिव के विभिन्न रूपों 11 शिवलिंगों का दर्शन व पूजन का अवसर मिलता है. यहां शिव 11 रूपों महादेव, शिव, रुद्र, शंकर, नील लोहित, ईशान, विजय, भीम देवदेवा, भदोद्भव एवं कपालिश्च के दर्शन का सौभाग्य शिव भक्तों को विशेष तौर पर मिलता है.

इसके अलावा इस एकादश रुद्र मंदिर परिसर में विष्णु के विभिन्न अवतारों, श्री विद्या यंत्र, विष्णुपद गया क्षेत्र, महाकाल, महाकाली, गणेश सरस्वती आदि साथ ही आम एवं महुआ का आलिंगन-बद्ध वृक्ष, भगवान शिव, पार्वती, महा-लक्ष्मी, महा-सरस्वती यंत्र, विष्णु-पादुका आदि के भी दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है.

इस परिसर स्थित पीपल वृक्ष का भी तांत्रिक महत्तम अलग ही है. कहते हैं कि इसके स्पर्श मात्र से भूत प्रेत के प्रभाव से लोगों को मुक्ति मिल जाती है. वहीं श्री विद्या यंत्र के दर्शन व पूजन से लक्ष्मी एवं सरस्वती दोनों की कृपा बनी रहती है.

सोमवार के दिन यहां भंडारे का आयोजन किया जाता है, इस दिन यहां रुद्राभिषेक एवं षोडषोपचार पूजन करते हैं तो उनकी इच्छित मनोकामनाएं निश्चित रूप से पूरी होती हैं. पंडित जी बताते हैं कि यहां एक ही शक्ति-वेदी पर स्थापित शिव के सभी एकादश रुद्र लिंग रूपों में 10 मई से 21 मई 2000 ई. के बीच विभिन्न तरह की आकृतियां उभर आयीं.

1 महादेव – विगत 30 जुलाई 2001 को अर्द्ध-नारीश्वर का रूप प्रकट हुआ है. कामाख्या माई का ये भव्य रूप है. पांचवें सोमवारी के दिन गणेश जी गर्भ में प्रकट हुए. शिवलिंग पर ये रूप स्पष्ट नजर आती है.

2 शिव – प्रभु श्री राम ने कहा था कि मैं ही शिव हूं. इस लिंग में सिंहासन का चित्र उभरा है, जो प्रभु श्री राम का सिंहासन दर्शाता है.

3 रुद्र – भय को हराने वाले इस लिंग में बजरंगबली पहाड़ लेकर उड़ रहे है बड़ा ही अद्भुत चित्र प्रकट हुआ है.

4 शंकर – गीता के दसवें अध्याय में श्री कृष्ण ने कहा है कि मैं ही शंकर हूं. इस लिंग में श्री कृष्ण का सुदर्शन चक्र, बांसुरी और बाजूबंध स्पष्ट दृष्टिकोण होता है.

5 नील लोहित– जब महादेव ने विषपान किया था, तब उनका नाम नील लोहित पड़ गया था. इस लिंग में सांप एवं ऊँ का अक्षर प्रकट हुआ है.

6 ईशान – हिमालय पर निवास करने वाले महादेव जिसे केदारनाथ कहते हैं विगत नौ जुलाई 2001 सावन के पहले सोमवार को राजराजेश्वरी का रूप प्रकट हुआ.

7 विजय – इस शिवलिंग में छवि बन रही है जिस कारण आकृति अस्पष्ट है.

8 भीम – महादेव का एक रूप भी है. इस शिवलिंग में गदा की छवि उभर कर सामने आयी है. गदा का डंडा अभी धीरे-धीरे प्रकट हो रहा है.

कांची पीठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती, बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष आचार्य किशोर कुणाल व अधीक्षण पुरातत्व-विद डॉ. फणीकांत मिश्र आदि आये तो यहां शिव के एकादश रुद्र का अलौकिक रूप देख भाव विह्वल हो गये. उन्होंने कहा कि ये अपने आप में धार्मिक दृष्टिकोण से अद्वितीय पूजन व तीर्थ स्थल है.

9 देवादेव – ये लिंग सूर्य का रूप है. इस शिवलिंग में गदा के नीचे दो भागों से सूर्य की किरणें फूटकर शीर्ष में मिल रही है.

10 भवोद्भव – इस लिंग में उमा शंकर की आकृति प्रकट हुई है. दोनों आकृतियां धीरे-धीरे बढ़ रही है.

11 कपालिश्च– महादेव का एक रूप बजरंगबली है. बजरंगबली ब्रह्मचारी थे, इसलिये संभवतः इस लिंग में कोई चित्र नहीं उभर रहा है. किसी दिन ये शिवलिंग अपने आप पूरा लाल हो जायेगा.

बाबा जी का कहना है कि सभी शिव भक्तों को मात्र एक बार आकर इन शिवलिंगों उभरी हुई आकृतियों को देखे तो पता लगेगा कि ऐसे शिवलिंग विश्व में कहीं भी नहीं हैं

गौरतलब है कि प्रसिद्ध तांत्रिक पंडित मुनीश्वर झा ने 1953 ई. में यहां शिव मंदिर की स्थापना की थी. इस मंदिर में स्थापित सभी शिवलिंग काले ग्रेनाइट पत्थर के बने हुए हैं जिनका प्रत्येक सोमवार शाम को दूध, दही, घी, मधु, पंचामृत, चंदन आदि से स्नान होता है. श्रृंगार के लिये विशेष तौर पर कोलकाता से कमल के फूल मंगाये जाते हैं. प्रधान पुजारी कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने पितरों का पिंडदान करने नहीं गया नहीं जा पाते उनके लिये यहां गया क्षेत्र बना है जहां पिण्डदान कर मुक्ति पायी जाती है.

विघ्न हरण के लिये गणेश का दर्शन

एकादश रुद्र मंदिर स्थान में बायीं तरफ दुर्गा माता की सवारी सिंह एवं दूसरी तरफ भोले बाबा की सवारी बसहा को स्थापित किया गया है. इनके दर्शन के बाद विघ्न हर्ता श्री गणेश का दर्शन शिव भक्तों को होता है. एकादश रुद्र मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार एवं निकास द्वार के मध्य गणेश की प्रतिमा स्थापित की गयी है. शिव भक्त श्री गणेश की पूजा अर्चना कर उनसे विघ्न हरने की कामना करते है.

देव सभा : एक साथ विष्णु के सभी अवतारों का दर्शन

एकादश रुद्र मंदिर आने वाले शिव भक्तों को इसी परिसर में एक साथ विष्णु के कई अवतारों का दर्शन करने का सौभाग्य भी प्राप्त होता है. बेशकीमती व दुर्लभ काले ग्रेनाइट व सफेद संगमरमर से बने विष्णु के विभिन्न रूपों की आकर्षक प्रतिमाएं देख श्रद्धालु भक्त दंग रह जाते हैं तथा असीम श्रद्धा व आस्था पूर्वक पूजा- अर्चना करते हैं. राधा कृष्ण, बाला जी, नर-नारायण, सीता-राम, लक्ष्मी नारायण, विष्णु, वामन अवतार कमल नयन, सूर्य, महावीर, बुद्ध, लड्डु गोपाल समेत विभिन्न स्वरूपों के सैकड़ों मूर्तियां छोटे व बड़े आकार के एक साथ यहां स्थापित है.

एकादश रुद्र का दर्शन करने आने वाले श्रद्धालु भक्तों को महाकाल व महाकाली का भी दर्शन व पूजन का सौभाग्य प्राप्त होता है. महाकाल ने जो रूप धारण किया है एकादश रुद्र मंदिर परिसर में वही रूप स्थापित किया गया है. महाकाल व महाकाली की प्रतिमाएं भी काले ग्रेनाइट पत्थर की बनी हुई हैं. ये प्रतिमाएं अद्भुत व अलौकिक हैं. कहते हैं कि इनके दर्शन मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते है. काली पूजा के अवसर पर इनका विशेष पूजन पंडित आत्मा राम व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भुवनेश्वरी देवी द्वारा षोडषोपचार पूजन किया जाता है.

आम-महुआ वृक्ष का आलिंगन-बद्ध स्वरूप

मिथिलांचल में वर-वधू का दांपत्य जीवन दीर्घायु होने की कामना के लिये आम-महुआ का विवाह कराने की परंपरा अति प्राचीन काल से चली आ रही है. एकादश रुद्र मंदिर परिसर में आम- महुआ वृक्ष का आलिंगन बद्ध स्वरूप देख जहां लोग अचंभित हो जाते हैं, वहीं दंपति इस वृक्ष की पूजा- अर्चना कर अपने दांपत्य जीवन के सुखमय होने की कामना करते हैं. वधुएं हमेशा सुहागन रहने व पति के दीर्घायु होने तथा जन्म-जन्म तक साथ निभाने हेतु इस वृक्ष की पूजा करने के लिये दूर-दूर से आती हैं. आम-महुआ पेड़ का ये आलिंगन-बद्ध स्वरूप दुर्लभ माना जाता है. एक नहीं बल्कि तीन- तीन जगह ये दोनों वृक्ष आलिंगन-बद्ध हैं.

देवताओं की नगरी

एकादश रुद्र स्थान को विशेष पूजन स्थल का दर्जा हासिल है तो उसकी वजह ये भी है कि वहां कई देवताओं का दर्शन एक साथ हो जाते हैं. शिव के विभिन्न रूपों का दर्शन तो होता ही है साथ ही हिन्दू धर्म के अन्य अनेकों देवी देवताओं का भी दर्शन होता है. यही कारण है कि यहां आने वाले लोग कहते हैं कि एकादश रुद्र में अलग ही आकर्षण है जो शिव भक्तों समेत अन्य श्रद्धालु भक्तों को खींचता है.

क्या खरीदें

एकादश रुद्र का दर्शन करने के लिये यदि आप अन्य प्रांतों व देशों से आते हैं तो यहां विश्व प्रसिद्ध मिथिला पेंटिंग की खरीदारी मधुबनी एवं आसपास के गांवों से कर सकते हैं. सिक्कीमौनी व जूट से बनी विभिन्न कलात्मक चीजों की भी खरीदारी कर सकते है.

कहां ठहरें

यदि आप दूर-दराज से यहां आते हैं और रात में ठहरना चाहते हैं तो एकादश रुद्र मंदिर से 2.5 किमी दूर स्थित जिला मुख्यालय मधुबनी कें होटलो में ठहर सकते है.

कब आयें

वैसे तो आप यहां दर्शन व पूजन को कभी भी आ सकते हैं लेकिन रुद्राभिषेक व षोडषोपचार पूजन को आना चाहते हैं तो सोमवार के दिन आना विशेष शुभ है. यदि सावन माह की सोमवारी हो तो अद्वितीय अवसर माना जाता है.

कैसे आयें

मधुबनी जिला मुख्यालय से एकादश रूद्र महादेव स्थान तक जाने के लिये रिक्शा, टेम्पू, वाहन, आदि की सुविधा है, जबकि मधुबनी आने के लिये बस एवं रेलवे की सुविधा उपलब्ध है.

गुरु पूर्णिमा वास्तव में भक्त का दिन

- परम पूज्य श्री श्री रविशंकर जी

गुरु पूर्णिमा को गुरु का दिन कहते हैं लेकिन वास्तव मे यह है भक्त का दिन. यह कृतज्ञता महसूस करने का दिन है, इस सुंदर ज्ञान के लिये जो कि तुम्हारे सदगुरु से तुम्हे मिला है. कृतज्ञता महसूस करो कि कैसे इस ज्ञान ने तुम्हें परिवर्तित कर दिया है. कृतज्ञता व विनम्रता से भीतर सच्ची प्रार्थना का उदय (आविर्भाव) होता है. तीन प्रकार के लोग गुरु के पास आते हैं— विद्यार्थी, शिष्य व भक्त (श्रद्धालु).

एक विद्यार्थी गुरु के पास आता है, कुछ सीखता है, कुछ जानकारी प्राप्त करता है और स्कूल छोड़ देता है.यह ऐसे ही है जैसे गाइड के पास जाना हो. तुम पर्यटन- गाइड के साथ कोई पर्यटन – स्थल देखने जाते हो और वह तुम्हें सारे स्थल दिखा देता है और उनके बारे मे थोड़ी बहुत जानकारी भी दे देता है और फिर तुम उसे धन्यवाद कह देते हो और बात खत्म हो जाती है. विद्यार्थी वह होता है जो केवल जानकारी एकत्रित करता है लेकिन जानकारी ज्ञान नहीं होती और ना ही विवेक होती है.

तब होता है शिष्य, शिष्य-गुरु के पद-चिह्नों पर चलता है लेकिन उसका उद्देश्य होता है ज्ञान हासिल करना और अपने जीवन का सुधार करना. अतः वह केवल जानकारी एकत्रित नहीं करता बल्कि थोड़ा और भीतर तक जाता है. वह अपने जीवन में परिवर्तन लाना चाहता है और अपने जीवन का कुछ मतलब बनाना चाहता है. वह अपना समय निकालता है, अपनी क्षमता के अनुसार उन्नति करता है और हो सकता है उसे एक न एक दिन प्रबोध हो भी जाए. तब बारी आती है भक्त की. उसका उद्देश्य बोध प्राप्त करना भी नहीं होता. वह तो केवल प्रेम मे डूबा रहता है. उसे तो केवल सदगुरु से, प्रभु से, अनंतता से प्रेम हो जाता है. वह यह चिंता नहीं करता कि उसे बोध प्राप्त हुआ या नहीं. उसे यह भी चिंता नहीं होती कि उसे काफी बुद्धिमता प्राप्त हो गई या नहीं.बस वह तो हर पल प्रेम में डूबा रहता है और उसके लिये यही काफी होता है. ऐसे भक्त मिलना बहुत मुश्किल होता है. विद्यार्थी तो बहुत होते हैं, शिष्य थोड़े कम होते हैं. लेकिन भक्त कोई विरले ही होते हैं.

भगवान बनना कोई बड़ी बात नहीं है. कोई भी वस्तु तुम चाहो या ना चाहो भगवान ही है. लेकिन भक्ति कहीं कहीं ही प्रस्फुटित होती है. जहां ऐसी भक्ति उत्पन्न होती है, वही भक्त है. आकर्षण हर जगह होता है पर प्रेम कहीं-कहीं, लेकिन भक्ति तो बहुत ही दुर्लभ होती है. यह बहुत सुंदर चीज है.

एक विद्यार्थी आँखों में आँसू लेकर गुरु के पास आता है और जब जाता है तब भी उसकी आँखों मे आँसू होते हैं लेकिन यह आँसू थोड़ अलग तरह के होते हैं, ये कृतज्ञता के आँसू होते हैं, प्रेम के आँसू होते हैं. प्रेम में रोना बहुत सुंदर है. जो एक बार भी प्रेम में रोया है, वही इसका स्वाद जानता है और जब भी ऐसा होता है तो पूरी सृष्टि इसका आनन्द मनाती है. पूरी सृष्टि एक ही चीज चाहती है और वह है नमकीन आँसुओं को बदल कर मीठा हो जाना.

प्रेम ऐसी चीज है जिसमें विधाता भी आनन्द मनाते हैं. जितना तुम प्रभु को चाह्ते हो, वे भी तुम्हें उतना ही चाहते हैं. प्रभु भी तुम्हारे आने का इंतजार करते हैं.प्रभु भी तुम्हारे नजदीक आने को उतना ही उतावले हैं जितना तुम उनके पास जाने को. जब भी इस धरा पर किसी भक्त का आविर्भाव होता है तो प्रभु बहुत प्रसन्न होते हैं. इसलिये गुरुपूर्णिमा भक्त का दिन माना जाता है.

TATA

TATA STEEL

Values stronger than steel

www.tatasteelindia.com | www.valueabled.com | Join us at Follow us on

TATA

TATA STEEL

emirates.com
Tomorrow brings us all closer
To new people, new ideas and new states of mind.
Here's to reaching all the places we've never been.
Fly Emirates to 6 continents.
Hello Tomorrow
Emirates